सहयोग राशि – ₹ 100

हनुमत कृपा

वर्ष : 6, अंक : 7-8, जुलाई–अगस्त 2021

गुरुपूर्णिमा व श्रावण मास विशेष

उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले में हनुमतपुरम् (पिपरी साईंनाथपुर, कूड़ेभार) के मूल निवासी डा. आर. एस. द्विवेदी (आध्यात्मिक नाम स्वामी रामानंद सरस्वती जी) बीते कई दशक से अमेरिका सरकार में वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। वह प्रभु श्रीराम व हनुमानजी के परम् भक्त हैं। भारतीय मूल के हजारों हनुमान भक्तों के अलावा, अमेरिका समेत दुनिया के तमाम देशों के सैकड़ों श्रद्धालुजनों के जीवन में उनके प्रवचन का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ब्रह्म मुहूर्त में प्रतिदिन सुंदर कांड व हनुमान चालीसा का पाठ करना स्वामी जी की दिनचर्या का अहम् हिस्सा है। वह इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर स्पिरीचुयल एडवांसमेंट (आइसा) संस्था (अमेरिका) और संकट मोचन फाउंडेशन (भारत) के अध्यक्ष हैं। आध्यात्मिक मासिक पत्रिका 'हनुमत कृपा' का प्रकाशन भी स्वामी जी की प्रेरणा व आशीर्वाद से बीते छह सालों से निर्बाध गति से हो रहा है।

हनुमत कृपा

वर्षः 6, अंकः 7–8, संयुक्तांक 2021, पृष्ठः 52

प्रेरणास्रोत
स्वामी रामानन्द सरस्वती (यूएसए)

संरक्षक
संकट मोचन फाउंडेशन

संरक्षक मण्डल
डा. श्यामलाल कपूर
अशोक द्विवेदी
रंगनाथ महाराज
प्रेम नारायण पाण्डेय

प्रधान संपादक
डा. दिनेश चन्द्र द्विवेदी

सलाहकार संपादक
सियाराम पाण्डेय 'शांत'

संपादक
नरेश दीक्षित

सपांदक मण्डल
डा. सतीश चन्द्र अग्रवाल
डा. हरीराम त्रिपाठी
डा. कुसुम शर्मा

प्रसार प्रबंधक
धर्मेन्द्र सक्सेना

आवरण एवं सज्जा
जितेन्द्र कुमार

संपादकीय कार्यालय
बी–2778, इन्दिरा नगर, लखनऊ –16
मो.: 9415120002
ई–मेल : nareshdixit84@gmail.com

बेबसाइट :
www.hanumatkripaa.com
hanumatkripa.page

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक व सम्पादक नरेश दीक्षित द्वारा मेट्रो प्रिंटर्स, डी–102, महानगर, लखनऊ से मुद्रित एवं बी–2778 इन्दिरा नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
संपादक : नरेश दीक्षित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इसके लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण	पेज सं.
1.	अपनी बात	4
2.	संपादक की कलम से	5
3.	श्री गुरूदेव चरण कमलेभ्यो नमः	6
4.	जगद्गुरु हैं हनुमान जी	7
5.	आस्था एवं श्रद्धा का महापर्व–गुरूपूर्णिमा	10
6.	फर्रुखाबाद के नीब करौरी मंदिर में लक्ष्मी नारायण की मूर्ति स्थापित	12
7.	गुरु कृपा से ही प्रभु दर्शन संभव : रामानंद सरस्वती	13
8.	प्रभु से प्रार्थना	14
9.	भोले की भक्ति को समर्पित श्रावण मास	15
10.	रमन्ते योगिनः यस्मिन स रामाः	17
11.	रूद्रवतार श्री हनुमान	19
12.	हनुमत प्रेम–हनुमत निष्ठा	20
13.	महिलाओं ने महादेवा, कुंतेश्वर व पारिजात में किया पूजन–दर्शन	21
14.	हनुमानजी की सेवा ही जीवन का संकल्प	23
15.	संकट मोचन हनुमान मंदिर में भक्तों ने किया सुंदर कांड	25
16.	यूपी.उत्तराखंड में होगी 'बाबा नीब करौरी महाराज' फिल्म की शूटिंग	26
17.	मौन रूप में ही मौन प्रार्थनाएँ सुन ली	31
18.	भगवान कृष्ण की महिमा	32
19.	हनमत् प्राप्ति	34
20.	गुरु सेवा से ही प्रभु कृपा संभव	35
21.	शिव पूजन के लिए सर्वोत्तम है श्रावण मास	36
22.	सभी समस्याओं का समाधान भक्ति और आध्यात्मिक योग है	38
23.	पूज्य बाबा नीबकरौरी महाराज जी की अनूठी कृपा से जीवन दान	40
24.	सदगुरु के सात लक्षण	43
25.	मौन शक्ति	45
26.	नागों की पूजा से पूरी होती हैं मनोकामनाएं	46
27.	भक्त अभिनन्दन	47
28.	ईश्वर का अस्तित्व	47
29.	हनुमत् कृपा मासिक पंचाग अगस्त 2021	48
30.	हनुमत् कृपा मासिक पंचाग सितम्बर 2021	49
31.	सदस्यता पत्र	50

अपनी बात

संसार में प्रभु की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता है इस सच्चाई को जानते तो सब हैं लेकिन मानते कम लोग ही हैं। जीवन में जैसे ही पद, पैसा और प्रतिष्ठा बढ़ती है, व्यक्ति में अनायास अहंकार हो जाता है। वह बाहर से कम अंदर से बिल्कुल बदल जाता है। उसका आचार व्यवहार से लेकर बातचीत का तरीका तक बदल जाता है। उसके आस पास रहने और आने जाने वाले लोग तो इस अहंकारयुक्त बदले स्वभाव को बखूबी समझ जाते हैं लेकिन खुद वह व्यक्ति नहीं समझ पाता जिसमें यह बदलाव आता है। जिंदगी में सफलता के लिए सम्पन्नता के साथ नम्रता बेहद जरूरी है। जैसे पेड़ में फल लगते ही वह झुक जाता है, उसी तरह संत स्वभाव वाला व्यक्ति भी भौतिक सुविधाएं बढ़ने पर सरल और उदार हो जाता है। बीते दो सालों से प्रयास है कि हनुमत कृपा पत्रिका का हर माह नियमित प्रकाशन हो और देशभर के उन सभी भक्तजनों को हर माह पत्रिका पढ़ने को मिले जो इससे जुड़े हैं। लेकिन लाख कोशिश के बाद भी अलग अलग वजह से यह संभव नहीं हो पा रहा है। विश्वव्यापी महामारी कोरोना ने जहाँ देश दुनिया की सारी अर्थव्यवस्था चौपट कर दी, वहीं हनुमत कृपा पत्रिका पर भी इसका खासा असर पड़ा। पत्रिका से जुड़े कई साथी व शुभचिंतक हमेशा के लिए हमसे दूर चले गये। जिसका पूरे पत्रिका परिवार को कष्ट है। पिछले साल कोरोना ने गुरुदेव महाराज के परम् भक्त पटना (बिहार) के रहने वाले हमारे सुख दुःख के साथी और सम्पादक मंडल के सक्रिय सदस्य सुधीर कुमार सिन्हा को हम सब से छीन लिया था। इस बार पूज्य बाबा नीब करौरी महाराज के बेहद करीबी रहे पंडित गुरुदत्त शर्मा के दामाद व बाबा जी के प्रिय भक्त कानपुर निवासी डॉ. राम कृष्ण शर्मा और उनकी पत्नी (वृंदावन धाम ट्रस्ट की ट्रस्टी) को कोरोना की चपेट में लेकर दुनिया से छीन लिया।

प्रभु की कृपा से पत्रिका के प्रकाशन के छह साल पूरे हो रहे हैं। भक्तजनों की पहली पसंद बन चुकी हनुमत कृपा पत्रिका अब किसी परिचय की मोहताज नहीं है. जो प्रभु श्रीराम, हनुमान जी व गुरुदेव महाराज का भक्त है वह 'हनुमत कृपा' पत्रिका को जरूर जानता है। सभी भक्त अच्छी तरह जानते हैं कि यह पत्रिका समर्पित लोगों द्वारा व्यवसाय के लिए नहीं, मिशन के तहत प्रकाशित की जा रही है। उद्देश्य सिर्फ इतना कि देश दुनिया के भक्तजनों को आध्यात्म के क्षेत्र में अच्छी से अच्छी जानकारी हर माह पत्रिका के जरिये मिलती रहे। भौतिकता की अंधी दौड़ में शांति सुकून खोता जा रहा है। सम्पन्नता तो बढ़ रही है लेकिन तनाव उससे ज्यादा बढ़ता जा रहा है. माया मोह छोड़कर साधु–संत बने गेरुवा वस्त्रधारी बाबा भी मठ–मंदिर की सम्पत्ति हड़पने के लिए मुकदमा लड़ने और प्रतिद्वंद्वी की हत्या तक करने–कराने में नहीं हिचक रहे हैं। युवा पीढ़ी का पूजा पाठ से छत्तीस का आंकड़ा होता जा रहा है। सुबह मंदिर में जाकर प्रभु के सामने मत्था टेकने की परम्परा धीरे धीरे कम होती जा रही है। रात में देर से सोना और सुबह से जगना आदत में शुमार हो गया है। कष्ट में ही भगवान को याद करने के बजाय हमेशा प्रभु की शरण में अपने को रख कर जीवन यापन करना ही श्रेयकर है। प्रतिदिन सुबह सूर्योदय और शाम को सूर्यास्त हमें यही सीख देता है कि जीवन एक जैसा नहीं रहता है। उत्थान–पतन प्रकृति का नियम है। जो जिस क्षेत्र में जितनी तेजी से उठता है, यदि संतुलन बनाने में चूक हुई तो उसी तेजी से गिरता भी है। आध्यात्म का मार्ग जितना सरल और सीधा दिखाई देता है, उतना है नहीं। मनोवृत्तियों पर अंकुश लगाना कितना मुश्किल है यह तो वही साधक बता सकता है जिसने सालों अभ्यास के बाद इन्द्रियों पर नियंत्रण पाया हो। संसार का माया जाल छोड़ पाना भी बेहद कठिन है। सब छोड़कर प्रभु में मन रमाना आसान नहीं है। यह तभी संभव है ज़ब भगवान की कृपा भक्त पर हो जाये।

बाबा जी के भक्तजनों के लिए बहुत खुशी की बात है कि पूज्य बाबा नीब करौरी महाराज जी के जीवन पर आधारित पहली फीचर फ़िल्म की तैयारी पूरी हो चुकी है। फ़िल्म के पोस्टर का विमोचन भी कैंची धाम, ऋषिकेश, श्रीआनंद आश्रम (हल्द्वानी), वृंदावन धाम, अकबरपुर (फिरोजाबाद), सांडी आश्रम (हरदोई), 4–चर्च लेन (प्रयागराज), हनुमान सेतु (लखनऊ), आदि आश्रम व मंदिरों में हो चुका है। फ़िल्म की शूटिंग शुरू होने वाली है, जो उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के विभिन्न क्षेत्रों में करीब छह महीने चलेगी। उम्मीद है अगले साल तक फ़िल्म तैयार होकर दुनियाभर के भक्तों को रुपहले पर्दे पर देखने को मिल जाएगी। फ़िल्म के निर्माता, निर्देशक व कहानीकार शरद सिंह ठाकुर तथा निर्माता व कहानीकार श्रीमती कनक चंद हैं। ■

जय श्रीराम। जय हनुमान।

संपादक की कलम से

गुरु को ही भगवान मानो

नरेश दीक्षित

इस संसार में गुरु से बड़ा कोई नहीं है। गुरु ही ऐसा सेतु है जो भक्त को भगवान से सीधे मिलवा देता है। गुरु की महिमा हमेशा रही है और रहेगी। गुरु का नाम आते ही सभी को बचपन में पढ़ाया गया यह श्लोक जरूर याद आ जाता है 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवै महेश्वरा, गुरुर्साक्षात परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः'। जीवन में जिसने गुरु को जान लिया मानो उसने भगवान को जान लिया। सच्चा गुरु भगवान का पक्का साथी होता है, वह उसी भक्त को प्रभु के साक्षात् दर्शन करवाता है जो भगवान के दर्शन करने योग्य होता है। गुरु बनाते समय बहुत सतर्क रहने की जरूरत होती है। हड़बड़ी में बिना जांचे परखे कभी गुरु नहीं बनाना चाहिए। कलियुग में गुरुओं की कमी नहीं है। एक ढूंढो, सौ मिलते हैं। बनुआ गुरुओं की भीड़ में सच्चा गुरु तलाशना बहुत कठिन है। सौभाग्यशाली भक्तों को ही भगवत स्वरूप गुरु मिलते हैं। जिन्हें सद्गुरु मिल गये मानो उन्हें भगवान ही मिल गये। गुरु के बताये सन्मार्ग पर चलते और सत्कर्म करते हुए ही भक्त का भगवान से साक्षात्कार हो जाता है। गुरु को गोविन्द से बड़ा मानते हुए कबीर दास ने लिखा है 'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौ पायं। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो मिलाय।' संसार में गुरु भगवान का साक्षात् स्वरूप होता है। प्रभु के दर्शन तो परम् सौभाग्यशाली संतों, महापुरुषों व गृहस्थों को ही होते हैं लेकिन सच्चे गुरु को ढूंढ़ने की तड़प हो तो वह अपनों के बीच ही कहीं न कहीं मिल जाता है। गुरु की हर बात को गौर से सुनकर उस पर अक्षरशः पालन करना चाहिए क्योंकि गुरु के मुँह निकला हर शब्द गूढ़ रहस्य वाला होता है। भक्त आसानी से गुरु की बात का रहस्य नहीं समझ पाता है। गुरु सर्वज्ञ होता है। वह सब जानता है। उससे कुछ छिपाना नहीं चाहिए। चालाकी त्याग कर पूर्ण समर्पण भाव से गुरु के सामने विनत होकर सीखने की नियत से जाना चाहिए। गुरु में कमियां ढूढ़ने की गलती कभी नहीं करना चाहिए। जिसे गुरु मानो उसे साक्षात् भगवान जानो। गुरु से जाने–अनजाने में भी भक्त का अहित नहीं हो सकता है। वह तो सिर्फ भक्त की भलाई की ही कामना करता है। हनुमान चालीसा में हनुमान जी की प्रार्थना की चौपाई है 'जय जय जय हनुमान गोसाई, कृपा करहुँ गुरुदेव की नाई'। गुरु कृपा का मतलब है प्रभु का आशीर्वाद। भगवान कभी अपने असली रूप में भक्त के पास नहीं आते हैं। वह अधिकतर गुरु के रूप में ही दर्शन देते हैं। सौभाग्यशाली लोग ही इस पुण्य के भागीदार बन पाते हैं। कई लोग मौका पाकर भी इस परम् कल्याणकारी क्षण को भी गंवा देते हैं। गुरु दर्शन को प्रभु दर्शन मानकर पूरी निष्ठा व समर्पण के साथ भक्त को आशीर्वाद की कामना करनी चाहिए। प्रसन्न मुद्रा में दिया गया गुरु का आशीर्वाद अवश्य फलीभूत होता है। गुरु को मनसा वाचा कर्मणा कभी दुःखी व नाराज नहीं करना चाहिए। जिस प्रकार गुरु के आशीर्वाद का सुखद फल जरूर मिलता है, उसी तरह गुरु के क्रोध व नाराजगी का दुःखद परिणाम भी शिष्य को अवश्य भोगना पड़ता है। गुरु का चेहरा देखकर मन के भाव समझ लेने वाला शिष्य ही भविष्य में गुरु का सबसे प्रिय भक्त बन जाता है। निष्ठा व समर्पण भाव ही एक दिन उसे गुरु की आंतरिक आध्यात्मिक शक्तियों का स्वामी बना देता है।

सहज और सरल जीवन ही इंसानियत का पहला सबक है। हर जीव में प्रभु के दर्शन ही आध्यात्मिक जीवन का मूल है। ज़ब तक भौतिक सुख सुविधाओं को भोगने की लालसा बनी रहेगी, शांति नहीं मिल सकती है। छोड़ने में जो सुख है वह भोगने में नहीं है। दूसरों का दुःख दर्द बाँट कर जो सुखानुभूति करता है वही आनंद है। गुरु हमेशा ईश्वर भक्ति में लीन होकर आनंदानुभूति करने का संकल्प लेने की बात करता है। वह लोहे को तपाकर सोना बनाना चाहता है। लेकिन सोना बनने के लिए पहले आग में तपना पड़ता है। गुरु सुनार की तरह पहले शिष्य को योग व साधना की आग में तपाता है फिर धीरे–धीरे उसे सुंदर तस्वीर की तरह गढ़ता है। मानव समाज में सम्पूर्ण कोई नहीं है। ईश्वर ने मानव संरचना में सबमें कोई न कोई दोष या कमी छोड़ दी है। गुरु कृपा से जिसका दोष या कमी दूर हो गयी वही भीड़ से अलग दिखने वाला संत हृदय भक्त–शिष्य बन गया। जो अपनी कमी नहीं दूर कर सका वह गुरु कृपा रूपी कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर भी माया मोह में फंसा दुर्भाग्यपूर्ण जीवन जीता रहा। यह संसार सोने का भंडार भी है और कोयले की खान भी। भगवान ने संसार में आने वाले हर मनुष्य का भाग्य खुद उसके हाथों में कर्म के रूप में सौंप दिया है। जो जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल भोगता है। बबूल का पेड़ बोकर कोई आम कहां खा सकता है ? सुख शांति व सम्मानजनक जीवन जीने के लिए सही रास्ते पर चलते हुए प्रभु भजन में मन लगाना चाहिए। ■

श्री गुरूदेव चरण कमलेभ्यो नमः

गुरू चरणों मे नमन हमारा
मन का कलुष मिटा कर जो
दें विवेक की धारा
देकर अविचल भक्त प्रभू की
अज्ञान तमस को दूर करें
काम क्रोध का गरल भरा जो
उसे हटा कर ज्ञान दीप से
भक्ति अमिय भरपूर करें
गंगा यमुना सरस्वती सम
बहे ज्ञान की धारा
गुरू चरणों मे नमन हमारा
मन का कलुष मिटा कर जो
दें विवेक की धारा
चरण पादुका गुरू चरणों की
बोध मोक्ष देने वाली
भव सागर के जितने संशय
उन सबको हरने वाली
ज्ञान चक्षु को निर्मल कर
पावन कर दे जीवन सारा
गुरू चरणों मे ननन हमारा
मन का कलुष मिटा कर जो

डा. शैलजा द्विवेदी
बैंगलोर

जगद्गुरु हैं हनुमान जी

भगवान शिव के जगद्गुरु स्वरूप से सभी अवगत हैं लेकिन हनुमानजी भी जगद्गुरु हैं, इस बात से कम ही लोग वाकिफ हैं। शंकर जी गुरुओं के भी गुरु हैं। परम योगी हैं। वीतरागी हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि 'जगद्गुरो नमस्तुभ्यं शिवाय शिवदाय च। योगिन्द्राणांयोगीन्द्र गुरुणां गुरुवे नमः।' शिवावतार होने के नाते हनुमान जी में उनके सारे गुण विद्यमान हैं। वे भी जगद्गुरु हैं।

संसार की उत्पत्ति करने वाले ब्रह्मा जी को भी जो श्रीराम तारक मंत्र का उपदेश करते हैं,वे हनुमान जी तो इस लिहाज से जगद्गुरुओं के भी दादा गुरु प्रमाणित होते हैं। यूं तो ब्रह्मा और विष्णु दोनों को ही भगवान शिव ने प्रणवाक्षर ओम का उपदेश दिया था। अक्षर ज्ञान और योग का ज्ञान दिया था लेकिन हनुमान जी भी इस मामले में कुछ कम नहीं है। जिस श्रीराम तारक मंत्र का ज्ञान भगवान राम ने सीता जी को दिया था और सीता जी ने हनुमान को दिया था, उसी तारक मंत्र का ज्ञान हनुमान जी ने ब्रह्मा जी और सनक–सननंदन और सनत्कुमार आदि ऋषियों को दिया था। उनके जैसी ध्याननिष्ठा और एकाग्रता किसी में भी नहीं है, इसका ज्ञान गंधमादन पर्वत की उपत्यिकाओं में उन्होंने भीमसेन को दिया था जो दुर्योधन से गदा युद्ध के दौरान भीम के बहुत काम आया था।

रामानंद सम्प्रदाय में हनुमान जी को श्रीराम मंत्र का प्रधान आचार्य माना जाता है और उनकी उसी रूप में सेवा की जाती है। स्वामी अनंताचार्य के 'सिद्धांत दीपक' ग्रंथ में हनुमान जी को श्रीराम मंत्र का प्रवर्तक कहा गया है। हनुमान जी भक्ति के आचार्य हैं। वे योग–दर्शन के भी आचार्य हैं। हनुमान जी से बड़ा वीतरागी और कर्मयोगी इस धरा–धाम पर दूसरा कोई नहीं है। हनुमान जी महाराज उपनिषदों के उपदेष्टा आचार्य हैं। श्रीरामोपनिषद और श्रीरामरहस्योपनिषद का

सियाराम पांडेय 'शांत'
लखनऊ
मो.: 7355629443

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

उपदेश तो हनुमान जी ने ही अपने श्रीमुख से किया है। वे संगीत विद्या के भी आचार्य हैं।

हनुमत्संहिता में उन्होंने संगीत में अलंकार सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। संगीत में भाल अलंकार से लेकर कई अन्य अलंकारों की रचना और उपदेश खुद हनुमान जी महाराज ने किया है। हनुमत् अलंकारों को भारतीय संगीत में अत्यंत प्रतिष्ठा के साथ याद किया जाता है। राम नाम संकीर्तन में हनुमान जी का गायन और नर्तन तो नारद जी जैसे संगीताचार्य को भी हतप्रभ और मंत्रमुग्ध कर देता है। रामानंद सम्प्रदाय में हनुमान जी को संप्रदायाचार्य माना जाता है और इसी रूप में उनकी आराधना की जाती है।

समर्थ सम्प्रदाय तो हनुमान जी को ही समर्थ गुरु रामदास का गुरु मानता है। वहां का वंदन मंत्र है–'आदि नारायणं विष्णुं ब्रह्माणं च वशिष्ठकम्। श्रीरामं मारुतिं वंदे रामदासं जगद्गुरुम्।' समर्थ संप्रदाय के विशेषज्ञ अध्येताओं का कहना है कि हनुमान जी ने समर्थ गुरु रामदास को जब वे बीस साल के थे, तभी वामन स्वरूप में राम नाम का मंत्र दिया था और उन्हें उसी तरह भगवान राम के दर्शन कराए थे, जिस तरह उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास जी को भगवान श्रीराम के दर्शन कराए थे। हनुमान जी के आदेशानुसार गोस्वामी तुलसीदास चित्रकूट पहुंच तो गए लेकिन लंबे समय तक उन्हें प्रभु श्रीराम के दर्शन नहीं हुए। तब उन्होंने हनुमान जी से निवेदन किया। तुलसीदास जी चंदन घिसते रहे और प्रभु श्रीराम भ्राता लक्ष्मण के साथ तिलक कर निकल गए। जब दूसरे दिन प्रभु श्रीराम तिलक करने लगे तो हनुमान जी ने तोते की आवाज में गोस्वामी तुलसीदास को सजग कर दिया। 'चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर। तुलसिदास चंदन घिसैं, तिलक देत रघुवीर।' तब जाकर तुलसीदास को सानुज श्रीराम के दर्शन लाभ हो सके थे। तभी तो गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान चालीसा में लिखा है कि 'जय–जय–जय हनुमान गुंसाई। करहुं कृपा गुरुदेव की नाईं। बहुत कम लोग जानते हैं कि रामचरित मानस हनुमान जी के मार्गदर्शन में लिखा गया है। जहां कहीं भी तुलसीदास को रचना विधान में परेशानी आई, हनुमान जी ने प्रकट होकर गोस्वामी तुलसीदास की उस समस्या का समाधान किया। हनुमान जी सभी भारतीयों के गुरु और धर्मादर्श हैं। वालिगोंदु नविके के पृष्ठ 90–92 पर लिखा है कि 'मन में स्थित करो राम को सन्मति से, जनम को करने दें सार्थक हे हनुमद्गुरु।'

सनक–सनंदन–सनत्कुमार आदि ऋषियों–मनीषियों को हनुमद् उपनिषद में तारक मंत्र का उपदेश

करते हुए हनुमान जी कहते हैं कि 'राम एव परम ब्रह्म राम एव परं तपः। राम एव परम तत्वं श्रीरामो ब्रह्म तारकम।' आदि रामायण में उल्लेख मिलता है कि जब नल–नील के समुद्र में डाले गए पत्थर अलग–अलग तैरने लगे तो उन्हें राम नाम का उपदेश हनुमान जी ने ही किया था। वे एक पत्थर पर 'रा' और दूसरे पर 'म' लिखते। इस तरह पत्थर आपस में जुड़ने लगे। उन्होंने नल–नील से कहा था कि 'एकतः सकला मंत्रा एकतो ज्ञानकोटयः। एकतो रामनाम स्यात् तदपि स्यान्न वै समम।' अर्थात रामनाम की बराबरी कोई मंत्र नहीं कर सकता। यही बात भगवान शिव ने माता पार्वती से कही थी। 'राम रामेति–रामेति रमे रामे मनोरमे। एक नाम सहस्त्रतुल्यं रामनाम वरानने। 'मतलब संसार में जितने भी महामंत्र हैं, राम नाम उन सबमें श्रेष्ठ है। वह सहस्रों महामंत्रों के बराबर है।

हनुमान जी ने पूरे संसार को निर्मल भक्ति का उपदेश दिया है। 'सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने वश करि राखे रामू।' भक्त भगवान को अपने मन, कर्म और वचन से, अपनी भक्ति भावना और आज्ञाकारिता से अपने वश में कर सकता है। हनुमान जी से बेहतर इस बात को कोई भी नहीं जानता। हनुमान जी परम वीतरागी हैं। योग भाष्य में कहा गया है कि 'ज्ञानस्यैव पराकाष्ठा वैराग्यम्।' अर्थात ज्ञान की पराकाष्ठा ही वैराग्य है और हनुमान जी तो ज्ञानियों में अग्रगण्य हैं। इस नाते गुरु होने का गौरव तो कोई परम योगी और वैरागी ही प्राप्त कर सकता है।

हनुमान जी महाराज ने परशुराम जी को ज्ञान दिया था और उनकी चेतना में करुणा और दया का संचार किया था। 21वीं बार जब परशुराम जी धरती के क्षत्रियों का नाश कर रहे थे, उस समय कुछ क्षत्रियों ने बालक मारुति से रक्षा की गुहार लगाई थी। तब हनुमान जी ने परशुराम को क्षत्रियों का वध करने से रोक दिया। इसे लेकर उनका हनुमान जी से युद्ध भी हुआ। एक स्थिति यह भी आई कि हनुमान जी के मुष्टिका प्रहार से परशुराम जी बेहोश हो गए। हनुमान जी ने उन्हें एक पेड़

से बांध दिया और उनका हाथ पकड़कर यह जान लिया है कि उनके मस्तिष्क में क्रोध और प्रतिशोध के अतिरिक्त अन्य कोई भाव नहीं है। अन्य मानवीय संवेदनाओं को उनके हृदय में प्रवेश कराने के लिए परशुराम का रोना जरूरी था। इसलिए हनुमान जी पितृलोक गए। उनके पिता जमदग्नि, माता रेणुका और दादा भृगु से मिले और पितरों के प्रमुख अर्यमा की अनुमति से उन्हें लेकर धरती पर आए। जब पूर्वजों की आत्मा ने उन्हें समझाया कि उनके कर्मों से उन्हें गति नहीं मिल रही है। इसलिए वे निर्दोष क्षत्रियों का वध बंद कर दें। पिता जमदग्नि के हत्यारे सहस्त्रबाहु का वध तो कर ही चुके हो। अब हमारा तर्पण करो ताकि हमारी आत्मा को शांति मिले। यह कहकर पूर्वजों की आत्माएं गायब हो गई। तब परशुराम दहाड़ मारकर रोने लगे। हनुमान जी इतने में सामने प्रकट हो गए। परशुराम जी ने उनसे पूछा कि मेरे परशु का प्रहार मेरे गुरु भगवान शिव के अतिरिक्त तीनों लोकों में कोई नहीं झेल सकता लेकिन वानर तुम कौन हो तब हनुमान जी शिव स्वरूप में प्रकट हो गए। तब परशुराम ने अपनी धृष्टता के लिए उनसे क्षमा मांगी और कहा कि मेरे द्वारा किए गए नरसंहार से सारे जलाशय अपवित्र हो गए हैं। मैं कहां अपने पितरों का तर्पण करूं तो भगवान शिव ने परशुराम पर प्रसन्न होकर सारे जलाशयों को निर्मल कर दिया। पितरों के तर्पण के बाद परशुराम जी ने हनुमान जी से पूछा कि वे अब क्या करें तो उन्होंने कहा कि वे महेंद्राचल पर्वत पर शिवाराधन करें। उनके आदेश से परशुराम जी महेंद्र पर्वत पर साधना करने चले गए।

रावण शिव जी का शिष्य था। हनुमान जी साक्षात शिव है। उन्होंने इस नाते उसे समझाने की कोशिश भी की लेकिन वह नहीं माना। वह हनुमान जी को पहचान नहीं पाया। उल्टा 'मिला हमहिं कपि गुर बड़ ग्यानी' कहकर उनका उपहास भी किया। परिणाम क्या हुआ। इक लख पूत सवा लख नाती। ता रावन घर दिया न बाती।' रावण के कुल में कोई नहीं बचा। इसके विपरीत विभीषण ने हनुमान जी के मंत्र अर्थात सलाह को माना तो वह लंका का राजा हुआ। 'तुम्हरो मंत्र विभीषन माना। लंकेस्वर भये सब जग जाना।' जो हनुमान जी को अपना गुरु मान लेता है, वह भगवान राम का प्रिय हो जाता है और जिसके दिल में राम बसते हैं, संसार में उसके लिए अलभ्य कुछ भी नहीं रह जाता।

गुरु पूर्णिमा पर गुरु गृह जाने और उनकी पूजा करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का विधान है लेकिन जिनके पास कोई गुरु नहीं है। उसे हनुमान जी को अपना गुरु मानना चाहिए। उनके मंदिर जाकर उनका आशीर्वाद लेना चाहिए। तुलसीदास जी महाराज ने तो हनुमान चालीसा में कुछ ऐसा ही उपदेश किया है। 'जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं। अगर किसी का गुरु नहीं है तो वह हनुमान जी को अपना गुरु बना सकता है। ईश्वर का साक्षात्कार बिना गुरुकृपा के असंभव है। गुरु ही गोविंद से मिलाने का काम करता है। शिष्य और भगवान के बीच गुरु सेतु का काम करता है। हनुमान जी अपने शिष्यों को भगवान से मिलाने में सिद्धहस्त हैं। चाहे सुग्रीव हों या विभीषण उन्हें प्रभु राम से मिलवाने वाले तो हनुमान जी ही हैं। तुलसीदास जी ने हनुमान चालीसा का शुभारंभ ही गुरु के चरणों में नमन करते हुए किया है–

श्री गुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुरु सुधारि। बरनऊं रघुवर बिमल जसु, जो दायक फल चारि। बुद्धि हीन तनु जानके, सुमिरौ पवन कुमार। बल, बुधि, विद्या देहु मोहिं हरहुं कलेश विकार। गुरु ही है जो अपने शिष्य को ज्ञान देता है। उसके कष्टों का हरण करता है। अपनी मति और गति को सही दिशा में रखकर अगर राम भक्त श्री हनुमान की कृपा पानी है तो उन्हें गुरु बनाने में ही कल्याण है।

पवनपुत्र हनुमान केवल श्री सीताराम की भक्ति के लिए ही अजर–अमर नहीं हैं बल्कि उनकी ख्याति संगीत के निष्णात आचार्य के रूप में भी है। कई पुराणों में हनुमानजी को संगीताचार्य कहा गया है। काशी के सुप्रसिद्ध संकटमोचन मंदिर जहां गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान जी के श्रीविग्रह की स्थापना की है, वहां हनुमान जी के संगीताचार्य स्वरूप को महत्व देने के लिए मंदिर के तत्कालीन महंतों ने भक्ति संगीत की शुरुआत की थी। वर्ष 1930 से यहां हर साल संगीत समारोह का आयोजन होता है। भारतीय संस्कृति में गुरु मुख होने की परंपरा है लेकिन हनुमान जी ने मधुर फल जानकर अपने गुरु भगवान सूर्य को ही अपने मुख में रख लिया था। 'लील्यो ताहि मधुर फल जानू।' इसके लिए और आया है कि बाल समय रवि भक्षि लियो तब तीनहुं लोक भयो अंधियारो।' बाद में उन्हीं भगवान सूर्य को हनुमान जी ने अपना गुरु बनाया और उनसे नौ विद्याएं सीखीं। इस बीच वे गुरु मुख के सामने होकर उनके रथ के समक्ष विपरीत दिशा में उड़ते रहे। उनके जैसा आज्ञाकारी शिष्य अन्यत्र दुर्लभ है। सूर्यदेव की आज्ञा से ही उन्होंने सुग्रीव का साथ दिया था।

गुरु पूर्णिमा के दिन जो भी भक्त गुरु रूप में भगवान शिव और हनुमान जी के दर्शन करते हैं, उनकी सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं। इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं है। हनुमान जी के मंत्र को जो भी अपने जीवन में उतारता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है। ■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

आस्था एवं श्रद्धा का महापर्व – गुरूपूर्णिमा

(गुरूब्रह्मा गुरूर्विष्णु गरूदेवो महेश्वरः। गुरू साक्षात परब्रहम तस्मै श्री गुरूवे नमः।।)

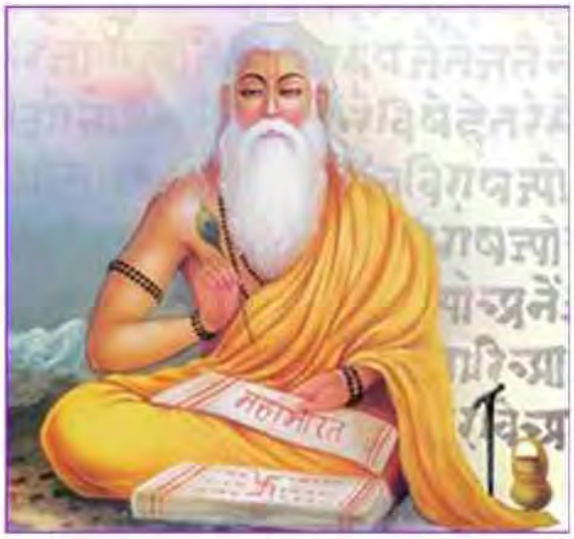

गुरू को परिभाषित करते हुये लिखा है :

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः।
तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थदेशको गुरूरूच्यते।।

अर्थात धर्म को जानने वाले , धर्म के अनुसार आचरण करने वाले, धर्मपरायण और सभी शास्त्रों में से तत्त्वों का ज्ञान देने वाले ही गुरू कहे जाते हैं।

निवर्तयत्यन्जनं प्रमादतः स्वयं च निष्पाप पथेप्रवर्तते । गुणाति तत्त्वं हितमिच्छुरंगिनाम्‌ शिवार्थिनां य सा गुरू निगद्यते।।

अर्थात जो दूसरों को पाप करने से रोकते हैं, स्वयं निष्पाप पथ पर चलते हैं तथा दूसरों का हित और कल्याण चाहने वालों को तत्त्व बोध कराते हैं उन्हें गुरू कहते हैं। श्रीमद्‌भगवत्‌गीता में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं :

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योग संसिद्धि कालेनात्मनि विन्दिति।

अर्थात इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निस्सन्देह कुछ भी नहीं है।

श्रद्धावान लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।

अर्थात जब जितेन्द्रिय, साधनपारायण और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है तो वह तत्काल भगवत्‌ प्राप्ति रूपी शान्ति को पा लेता है। यहां ज्ञान की प्राप्ति के महत्व को प्रतिपादित करते हुये इसे सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि एवं कर्म निरूपित किया गया है। यही ज्ञान हमे अपने आत्म स्वरूप को पहचानने के लिये एवं मन को निग्रह पूर्वक दैवीय गुणों से विभूषित करने वाला होता है।

डॉ. दिनेश चन्द्र द्विवेदी
बंगलौर, कर्नाटक
मो.: +91–8073335789

सद्‌गुरू के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने भी श्री रामचरितमानस की रचना के पूर्व मंगलानाम च कर्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ और वन्दे बोधमयं नित्य गुरू शंकररूपिणम्‌ कह कर गुरू का स्मरण करते हुये गुरू के महत्व को स्थापित किया है। गोस्वामी जी महर्षि वाल्मीकि एवं भगवान वेद व्यास जी को भी गुरू के रूप मे स्मरण करते हुये लिखते हैं : व्यास आदि कवि पुंगव नाना एवं चरण कमल वन्दहुं तिन्ह केरे।

॥ पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप। ॥

यहां गुरू शब्द को बहुत संकुचित अर्थ में नहीं लिया जा सकता है कोई भी सच्चरित्र व्यक्ति जो प्रेरकः

सूचकछचैव वाचको दर्शकस्तथा।
शिक्षको बोधकर्चैव षडेते गुरवः स्मरतः।।

अर्थात प्रेरणा देने वाले, सत्य उद्घाटित करने वाले , उचित रास्ता दिखाने वाले, शिक्षा देने वाले और बोध कराने वाले–सभी गुरू तुल्य होते हैं। श्री राम कथा के आदि कथाकार महर्षि वाल्मीकि जी ने देवर्षि नारद जी से सर्वप्रथम श्री राम चरित्र का श्रवण किया तो उन्होने श्री नारद जी का गुरू के रूप में अपने प्रिय शिष्य भरद्वाज जी के साथ विधिवत पूजन किया

नारदस्य तु तदावक्यं श्रुत्वा वाक्य विशारदः।
पूजयामास धर्मात्मा सहशिष्यो महामुनिः।।

अर्थात देवर्षि श्री नारद जी के मुख से प्रभु श्री राम जी के चरित्र का वृतान्त सुनकर महर्षि श्री वेदव्यास जी ने अपने शिष्य श्री भरद्वाज जी के साथ नारद जी का गुरू के रूप में पूजन किया। श्री गोस्वामी जी ने प्रभु श्री हनुमान जी की वन्दना भी गुरू के रूप में की है :

जय जय जय हनुमान गोसाई।
कृपा करहु गुरूदेव की नाईं ।।

वैदिक पंचाग के अनुसार आषाढ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को गुरूपूर्णिमा के रूप में मनाते हैं। इस तिथि को मूलतः व्यास पूर्णिमा कहते हैं। भगवान वेदव्यास ने वेदों का संकलन, पुराणों आदि की रचना की। साथ ही महाभारत की रचना इसी तिथि को पूर्ण की थी। तब तत्कालीन ऋषियों एवं देवताओं ने वेदव्यास जी का पूजन किया। उसी समय से व्यास पूर्णिमा मनायी जा रही है। जिसे बाद में सभी गुरू वर्ग को व्यास जी का स्वरूप मानते हुये गुरू पूर्णिमा कहा जाने लगा। कहा जाता है कि इस दिन जो भी शिष्य अपने सद्गुरू के श्री चरणों का संयम एवं श्रद्धा से पूजन करता है उसे वर्ष भर के सभी पर्वो के मनाने का पुण्य प्राप्त होता है। इस भौतिक जगत में जितनी आवश्यकता सम्पत्ति स्वस्थ्य परिजन आदि की होती है कहीं अधिक आवश्यकता सद्गुरू की होती है। यही सद्गुरू हमारे कलुष रूपी अन्धकार को अपने ज्ञान रूपी प्रकाश के माध्यम से निरूद्ध करते हैं। गुरू का स्थान ईइवर से भी अधिक श्रेष्ठ बताया गया है । अतः

शरीरं चैव वाचं"च बुद्धिन्द्रिय मनांसि च।
नियम्य प्रान्जलि तिष्ठेत वीक्षमाणो गुरोर्मुखम।।

शरीर वाणी बुद्धि इन्द्रिय और मन को संयम में रखकर गुरू के सन्मुख देखना चाहिये।■

बाबा नीबकरौरी

हनुमान भक्त थे, नीम करौरी महाराज,
सेतु निकट बाबा ने, मन्दिर–नीव रखी।
दर्शनों को आता रहा, सदा भक्तों का समूह,
देते थे प्रसाद बाबा, वस्तु उन्हें जो दिखी।।
मिट्टी की गुफा में वह, करें साधना "भ्रमर",
हनुमान आकृति है, दीवाल में बाबा–लिखी।
विघ्न साधना में, किसी भी प्रकार, पड़े नहीं,
आस–पास नहीं कोई, उनके सखा–सखी।।

मंदिर संचालन को, बनायी गयी समिति,
सदाकान्त शुक्ल जी, प्रबंधक–महान हैं।
हनुमत कृपा पत्रिका के, नरेश दीक्षित,
सम्पादक अनुभवी, अति ग्यानवान हैं।।
धर्म–कर्म निर्विघ्न, चलता सदैव "भ्रमर"
पूजन–भजन में, लगे सभी विद्वान हैं।
मंदिर के बाहर हैं, असहाय निर्धन जो,
बाबा कृपा से ही सदा, खाते पकवान हैं।।

गुरु ग्यान में है, ब्रह्मचारी बनाने की शक्ति,
ब्रह्मचर्य पालन बिना, न पाना ग्यान है।
रमता है मन, देह में ही, जिसका सदैव,
निकटता परब्रह्म, की, नहीं आसान है।।
मन को नियंत्रण में, रखकर ही "भ्रमर",
सन्तान प्राप्ति को, संसर्ग का विधान है।
सृष्टि के विस्तार हेतु, वंश–वृद्धि का नियम,
पूर्वजों का संस्कार, सक्षम, वरदान है।।

ब्रह्मचर्य पालन से, बढ़ता है ओज–तेज,
रक्षित हो रज–वीर्य, स्वस्थ तन प्रान है।
कुण्डलिनी शक्ति हेतु, आवश्यक ब्रह्मचर्य,
जाग्रत हो जीव परब्रह्म में, कल्यान है।।
शिष्य का करे वहन, योगक्षेम स्वयं गुरु,
योगेश्वर बना शिष्य, जो स्वयं प्रधान है।
महिमा अपार, मौन–साधना की, है "भ्रमर",
महाशक्तियों में यह, शक्ति बलवान है।।

'काव्यश्री' सम्पत्ति कुमार मिश्र ''भ्रमर बैसवारी''
(साहित्यकार–छंदकार–पत्रकार)
'विमल–भवन' विकासनगर, लखनऊ–22
चलभाष : 9454831866

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

फर्रुखाबाद के नीब करौरी मंदिर में लक्ष्मी नारायण की मूर्ति स्थापित

भक्तों के भगवान पूज्य बाबा नीब करौरी महाराज की तपोभूमि नीब करौरी आश्रम मंदिर (फर्रुखाबाद) में गुरुवार को विधि विधान से पूजा पाठ कर बहुप्रतीक्षित लक्ष्मी नारायण जी की दिव्य मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा व अन्य धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया। साढ़े तीन फिट लम्बी सफ़ेद संगमरमर की यह मूर्ति जयपुर (राजस्थान) निवासी व गुरुदेव महाराज के परम् भक्त राधेश्याम चतुर्वेदी ने मंदिर में स्थापित करवाई है। मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के बाद देशभर से आये सैकड़ों भक्तजनों ने पूर्णाहुति में हिस्सा लेकर मंदिर में सभी देवी – देवताओं के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। नीब करौरी आश्रम मंदिर के मुख्य पुजारी त्यागी जी महाराज ने बताया कि लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा में कोरोना प्रोटोकॉल का पूरी तरह पालन किया गया। उन्होंने बताया कि पूज्य बाबा जी के अनन्य भक्त जयपुर के रहने वाले राधेश्याम चतुर्वेदी, धर्मपत्नी प्रमिला चतुर्वेदी, बेटे प्रतीक व प्रणव, बहू रानी व श्वेता, पौत्र अवध, पौत्री आद्या व आराध्या तथा अन्य परिजनों व पांच आचार्यों के साथ दो दिन पहले मंदिर में आ गये थे। उसी दिन मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के विधान का श्री आरम्भ हो गया। त्यागी जी ने बताया कि पहले से बने मंदिर में गुरुवार की सुबह नौ बजकर 35 मिनट पर मंत्रोच्चारण के साथ लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कर दी गयी। गुरुदेव महाराज के कृपा पात्र श्री चतुर्वेदी ने बताया कि फर्रुखाबाद जनपद के नीब करौरी मंदिर में लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति की स्थापना बाबा जी के निर्देश पर हुई है।उन्हें गुरुदेव के निर्देश के साथ ही आशीर्वाद भी मिला जिससे यह पुण्य संकल्प पूरा हो सका। उन्होंने समारोह में स्थानीय भक्तों के अलावा दिल्ली, मुरादाबाद, बरेली, लखनऊ व प्रयागराज आदि शहरों से आये भक्तजनों का आभार जताया। कार्यक्रम के बाद सभी श्रद्धालु जनों ने बाबा जी द्वारा गोबर व चिकनी मिट्टी से दीवार पर बनाई हनुमान जी की मूर्ति, जमीन के नीचे बनी गुफा व बाबा जी की मूर्ति के दर्शन किये और मंदिर परिसर में अन्य भक्तजनों के साथ भोजन प्रसाद ग्रहण किया। बाद में, लखनऊ से आये आध्यात्मिक मासिक

पत्रिका के सम्पादक नरेश दीक्षित व उनकी पत्नी नीलम दीक्षित ने उन्हें गुरुदेव भगवान का मढ़ा चित्र भेंट किया जिसे उनके बेटे प्रतीक चौबे की आईटी सेक्टर की कंपनी आई ग्लोब सोल्यूशन के हैदराबाद में पहली अगस्त से शुरू होने वाले दफ्तर में लगाया जाएगा। लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में स्थानीय भक्त अबशेष वर्मा, राकेश यादव व अमित गुप्ता, दिल्ली से शैलेन्द्र सक्सेना, मुरादाबाद से दिनेश भरद्वाज, आंवला (बरेली) से प्रमोद ठाकुर, प्रयागराज से चित्रगुप्त वार्ष्णेय, राजेंद्र श्रीवास्तव, भदोही से शिव शंकर ठठेर, लखनऊ से आशीष दीक्षित, सीमा दीक्षित, सुमन मिश्रा, राजीव, धर्मेंद्र सक्सेना, रमेश शर्मा, आलोक श्रीवास्तव, राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव, ध्रुव कुमार जगधारी, माधुरी श्रीवास्तव, अमिय रानी सिंह, आदेश प्रताप सिंह, ललित श्रीवास्तव आदि भक्तजन शामिल रहे।■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

गुरु कृपा से ही प्रभु दर्शन संभव : रामानंद सरस्वती

यह संसार पृथ्वी पर ईश्वर की अनुपम देन है. यहाँ का हर चराचर प्राणी व सम्पूर्ण प्रकृति प्रभु की मर्जी से संचालित है। बिना ईश्वर की इच्छा पूरे ब्रम्हाण्ड में पत्ता भी नहीं हिल सकता है। नियम–संयम से रहकर ध्यान साधना में लगे रहने वाले संत हृदय सौभाग्यशाली लोगों को गुरु के आशीर्वाद से प्रभु की कृपा तो मिल जाती है लेकिन ईश्वर के विराट स्वरूप के दर्शन तो विरले ही संत–महंत और उच्चकोटि के साधकों को हो पाते हैं। वेद पुराण से लेकर बाद के महाकवियों तक ने गुरु का स्थान ईश्वर से भी बड़ा माना है–गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौ पाय, बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो मिलाय। इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर स्प्रिचुयल एडवांसमेंट (आइसा, अमेरिका) के अध्यक्ष स्वामी रामानंद सरस्वती जी गुरु की महिमा पर व्याख्यान देते हुए कहते हैं कि गुरु संसार में ईश्वर का साक्षात् स्वरूप होता है। बिना गुरु की कृपा के कोई प्रभु का आशीर्वाद नहीं पा सकता है। स्वामी जी ने गुरु शब्द की व्याख्या करते हुए बताया कि गु का अर्थ है अंधकार या मूल अज्ञान और रु का अर्थ है उसका

निरोधक अर्थात नष्ट करने वाला। तात्पर्य यह है कि जो मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाये, उसे ही गुरु कहा जाता है। 'अज्ञान तिमिरांधश्च ज्ञानांजन शलाकया, चक्षुन्मीलितम तस्मै श्री गुरुवै नमः'। इतना ही नहीं, सनातन परम्परा में तो गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान प्राप्त है। इसी कहा गया है –'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः, गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः'। गुरु ही भक्त और भगवान को एक दूसरे से मिलाता है। इसीलिए कहा जाता है कि जिसे सच्चा गुरु मिल गया मानो भगवान मिल गये। ईश्वर तक पहुंचने

का मार्ग गुरु ही प्रशस्त्र करता है। इस मार्ग में भी बहुत बाधाएं आती हैं जिन्हें गुरु अपने तप व साधना के बल से दूर कर देता है। सनातन परम्परा में गुरु पूर्णिमा का पवित्र पर्व उन सभी आध्यात्मिक गुरुओं को समर्पित है जिन्होंने कर्म योग के सिद्धांत के मुताबिक स्वयं और अपने शिष्यों के साथ सदैव सम्पूर्ण जगत के कल्याण की कामना की। गुरु पूर्णिमा का पर्व भारत, नेपाल और भूटान में हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म के अनुयायी बड़े उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। यह पर्व अपने आध्यात्मिक गुरुओं के सम्मान और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने का दुर्लभ क्षण है। हिन्दू पंचांग के अनुसार आषाढ़ मास की पूर्णिमा को ही गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया जाता है। हिन्दू परम्परा के अनुसार गुरु पूर्णिमा का पर्व वेदों के रचयिता महर्षि वेद व्यास के जन्मदिन के रूप में भी मनाया जाता है। इसीलिए इस पर्व का एक प्रचलित नाम व्यास पूर्णिमा भी है। रामानंद सरस्वती जी का कहना है कि गुरु पूर्णिमा का पर्व हमें अंधकार से प्रकाश अर्थात अज्ञान से ज्ञान के मार्ग पर ले जाने का सुगम व सरल तरीका दिखाता है। श्रीरामचरितमानस के रचयिता महाकवि तुलसीदास ने भी सद्गुरु के सात लक्षण बताये हैं. पहला बालक की तरह निर्मल व शुद्ध हृदय, दूसरा त्याग भावना, तीसरा निरंतर गतिशील रहने व मन में जाति, पंथ व पद का कोई भेद न करने वाला, चौथा शिष्य से मित्रवत व्यवहार करने वाला, पांचवां काम–क्रोध–मद–मोह इन चारों विकारों का दहन करने वाला, छठा मनरूपी नाभि के विकारों को छेदन कर नष्ट कर देने वाला और सातवाँ शिष्य के मन में उठने वाले सभी प्रश्नों का समुचित उत्तर देकर उसे संतुष्ट करने वाला ही सच्चा गुरु हो सकता है।■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

प्रभु से प्रार्थना

यह विनती है पल-पल क्षण-क्षण
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
भगवान तुम्हारे चरणों में
अपराध न हो इस सेवक से
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
भगवान तुम्हारे चरणों में
यह विनती है पल-पल क्षण-क्षण
चाहे दुःख का अंबार बनूं
चाहे सुख का भंडार बनूं
पर सभी परिस्थिति में भगवन्
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
भगवान तुम्हारे चरणों में
यह विनती है पल-पल क्षण-क्षण
यह मानव तन जो पाया है
हरिकृपा दृष्टि की छाया है।
मन की सब चंचलता छूटे
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
भगवान तुम्हारे चरणों में
यह विनती है पल-पल क्षण-क्षण
तुम ही गति मति के विधाता हो
मेरे मन के तुम ज्ञाता हो
इसलिए दास कह रहा यही
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
भगवान तुम्हारे चरणों में
यह विनती है पल-पल क्षण-क्षण
क्या कहूं प्रभू अन्तरयामी
मेरे जीवन धन ओ मेरे स्वामी
मुझे शक्तिहीन सत्य सरल
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
भगवान तुम्हारे चरणों में
यह विनती है पल-पल क्षण-क्षण

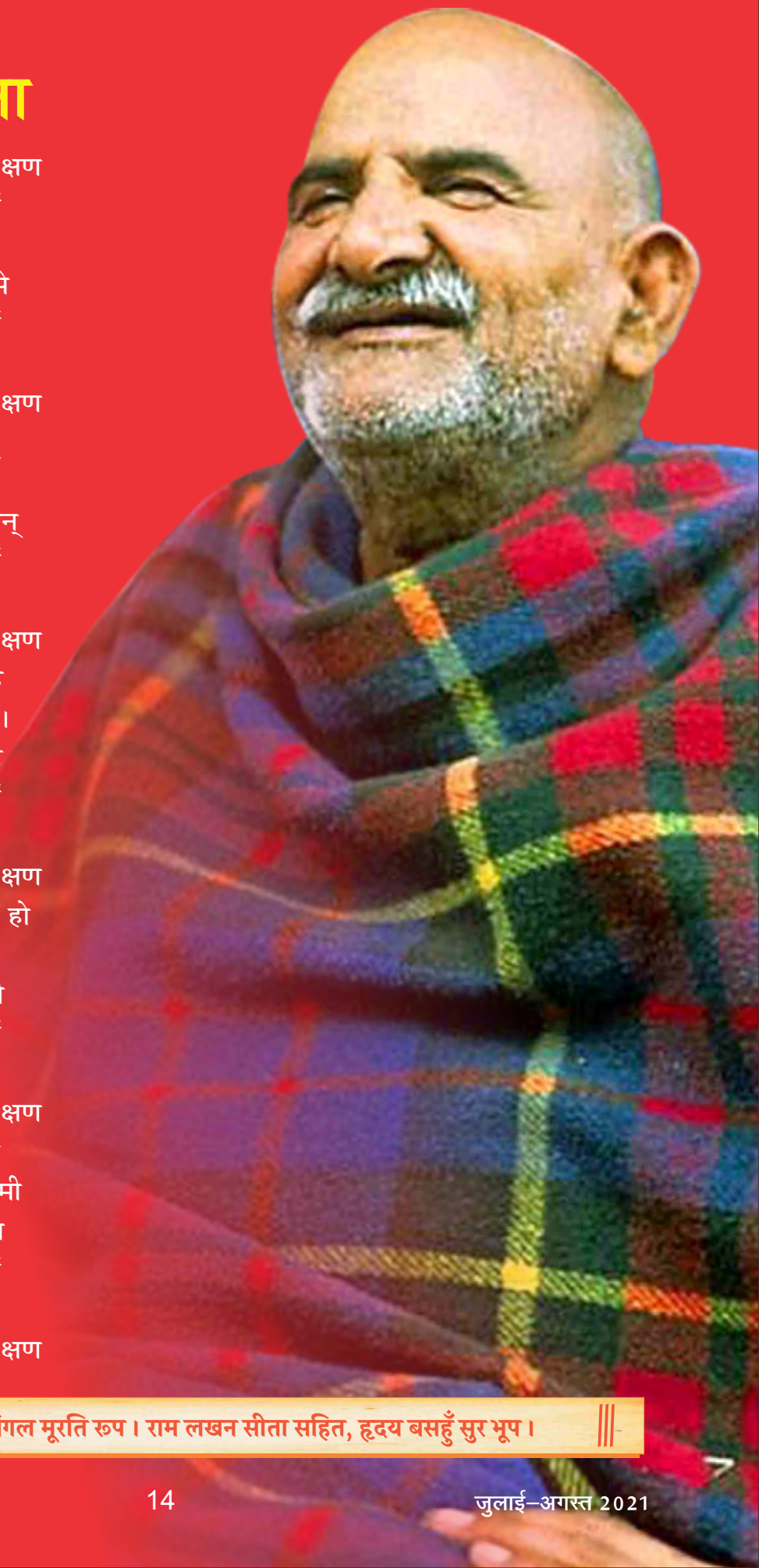

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

भोले की भक्ति को समर्पित श्रावण मास

डॉ. सतीश चन्द्र अग्रवाल
हल्द्वानी, नैनीताल
मो.: 7300520353

भगवान भोलेनाथ–शिव शंकर निर्गुण–निराकार रुप में बह्म हैं तो सगुण–साकार रुप में कैलाशवासी, अविनाशी, आशुतोष, अवढ़रदानी शिव। देवादिदेव शिव की शक्ति ही महामाया जगदम्बा रूप में संसार का संचालन करती हैं। सृष्टि के कण–कण में समाये शिव ही शिवलिंग में ज्योति के रुप में प्रकट होते हैं अतः ज्योतिर्लिंग की पूजा–आराधना–अभिषेक का विधान है। शिव रुद्र हैं–लय के देवता हैं। वे आत्मस्थ योगी हैं अतः एकान्तप्रिय हैं। शिव की कृपा के बिना शक्ति की आराधना अपूर्ण रहती है। वस्तुतः अर्द्धनारीश्वर रुप में अपने अर्द्ध भाग से मातृरुपेण कृपा की वर्षा करते हैं। वे ही माता हैं और पिता भी– 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'। वे आदि हैं–अनादि भी। शिव–शंभू जब कहते हैं तब शंभू माने स्वयंभू अर्थात जो स्वयं से प्रकट हुए हैं। उनके कोई माता–पिता नहीं हैं। वे स्वयं जन्म–मृत्यु से परे हैं। इस संदर्भ में सिद्ध–संत गोस्वामी तुलसीदास महाराज द्वारा रचित रुद्राष्टकम् की ये पक्तियाँ बड़ी सार्थक हैं–

नमामीशमीशान निर्वाण रुपं।
विभुं व्यापकं ब्रहम वेदस्वरुप।।
निजं निगुणं निर्विकल्प निरींह।
चिदाकाश माकाश वासं भजेहम्।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रुप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

हे ईशान दिशा के ईश्वर, मोक्षस्वरुप, विभु, व्यापक, ब्रह्म, वेदस्वरुप– मैं आपको नमस्कार करता हूँ। निज स्वरुप में स्थित, गुणातीत, भेदरहित, इच्छारहित, चेतन आकाश रूप दिगम्बर भगवन्– मैं आपका भजन करता हूँ।

वसन्त के बाद वैशाख –जेठ की भीषण गर्मी से तप्त धरती व जीव–जन्तु व्याकुल होकर आकाश में मेघों की प्रतीक्षा करते हैं। आषाढ़ में जब बादल बरसते हैं तो व्याकुल धरती पुनः शस्य श्यामला हो जाती है। नव अंकुर फूट पड़ते हैं। हरे–भरे पत्तों से पेड़ लहलहा उठते हैं। फिर आता है–श्रावण मास–यानी भोले की भक्ति का महीना। मन मयूर नाच उठता है। तभी तो एक फिल्मी गीत में गाया गया है– ''सावन का महीना, पवन करे शोर। जियरा रे झूमे ऐसे, जैसे वन मा नाचे मोर।।

ऐसे सावन मास में हजारों भोले के भक्त घरों से झूमते–गाते गंगा तटों की ओर निकल पड़ते हैं– काँवड़ में जल लाने ताकि वे शिवालयों में अभिषेक कर सकें। आजकल तो वाहनों में डैक व ध्वनिविस्तारक लगाकर भजनों व लोकगीतों की मस्ती के साथ झुण्ड के झुण्ड स्त्री–पुरुष–बालक हरिद्वार–ऋषिकेश की ओर प्रस्थान करते हैं। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान व बिहार तक से काँवड़िये हरिद्वार से गंगाजल लाकर अपने गाँव–शहर में शिवलिंग का अभिषेक करते हैं।

झारखण्ड में देवघर स्थित बाबाधाम, जिन्हें वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग नाम से जाना जाता है, वहाँ पूरे श्रावण मास कावड़ियों का ताँता लगा रहता है। दिन–रात पैदल चलकर सुल्तानगंज–गंगाजी से जल लेकर बाबाधाम में चढ़ाते हैं। वहाँ श्रावणी मेला भी लगता है और प्रतिदिन हजारों भक्तों की भीड़ उमड़ती है। गत वर्ष विश्वव्यापी कोरोना महामारी के कारण देवघर, हरिद्वार आदि की काँवड़ यात्राओं पर रोक लगा दी गई थी। इस वर्ष भी काँवड़ यात्रा प्रतिबन्धित कर दी गई।

उज्जयिनी स्थित काल के भी काल, महाकालेश्वर भूतभावन महादेव तो सावन के चारों सोमवार तथा भादों के दो सोमवार को शाही ठाठ–बाट के साथ अपनी प्रजा को दर्शन देने नगर–भ्रमण पर निकलते हैं। पालकी पर सवार महाकाल के साथ हाथी–घोड़े–पैदल हजारों शिव भक्त भजन–कीर्तन व नाचते–गाते आगे बढ़ते जाते हैं। इस यात्रा का दृश्य इतना मनमोहक होता है कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। शिव–भक्ति की गंगा ही मानों उज्जैन की गली–कूचों में उमड़ पडती है। महाकालेश्वर भारत के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रमुख हैं– साथ ही 51 शक्तिपीठों में से एक हरसिद्धि देवी का मन्दिर भी समीप में है। भगवान कृष्ण ने सांदीपनि गुरु के आश्रम में यही विद्या प्राप्त की। महाकवि कालिदास की आराध्या काली माँ का मन्दिर भी यहाँ है– जिसे गढ़कालिका कहा जाता है। हिन्दू धर्म का विक्रम सम्वत राजा विक्रमादित्य ने शुरु किया वे उज्जैन के शासक थे। कालिदास उनके दरबार में नवरत्नों में से एक थे। यहाँ प्राचीन वेधशाला भी है जो ग्रह–नक्षत्रों की गणना और पंचाग में सहायक थी। दक्षिणमुखी महाकाल का ज्योतिर्लिंग इस मायने में विशेष है कि प्रातः कालीन भस्म आरती की प्रथा यहीं है–अन्यत्र नहीं। यूँ तो पूरे वर्ष दर्शनार्थी यहाँ आते हैं किन्तु श्रावण मास में तो भक्तों की संख्या काफी बढ़ जाती है। सिंहस्थ कुम्भमेला भी हर बारह वर्ष में शिप्रा तट पर यहाँ लगता है।

सावन के महीने में दो प्रमुख पर्व और होते हैं– श्रावण शुक्ल तृतीया के दिन हरियाली तीज (इस वर्ष अगस्त 11 को) और शुक्ल पंचमी के दिन नाग–पंचमी (अगस्त 13)। जुलाई 24 को गुरुपूर्णिमा थी और जुलाई 25 से सावन मास शुरु हो गया। सावन का पहला सोमवार जुलाई 26 को था। सावन के सोमवार शिवपूजन के लिए विशेष माने जाते हैं क्योंकि सोमवार का दिन शिवजी को समर्पित होता है–जैसे कि रविवार सूर्य भगवान, मंगल हनुमान जी, बुध गणपति... आदि। पूरे श्रावण मास में भक्त शिवालयों अथवा घर के मन्दिर में धूप–दीप–नैवेद्य, पंचामृत, पुष्प, बेलपत्र, भाँग, धतूरा, फल आदि शिवजी, पार्वती, गणेश, नन्दी व कार्तिकेय (शिव–परिवार) को अर्पित कर अर्चन–वन्दन करते हैं आरती और भजन गाते हैं। रुद्राभिषेक भी कराते हैं। हरियाली तीज पर महिलाएं मेंहदी व अन्य श्रृंगार कर गौरा का पूजन करती हैं–व्रत रखती हैं। सावन में झूला झूलने की प्रथा भी, विशेषतया ग्रामीण अंचलों में अभी भी बरकरार है। महानगरों में झूले लुप्तप्राय हो गए हैं। नागपंचमी पर नाग की आकृति अथवा चाँदी–ताँबे के नाग बनवा कर उनका पूजन करते हैं। यह पर्व प्रकृति संरक्षण एवं जीव–जन्तुओं से भी प्रेम का प्रतीक है। नीलकण्ठ महादेव का तो श्रृंगार ही सर्प हैं। कुल मिला कर श्रावण मास उत्सवधर्मी पावन माह है। साधू–सन्तों के चतुर्मास का प्रारम्भ भी इसी माह से होता है।■

रमन्ते योगिनः यस्मिन स रामः

ओम प्रकाश दार्शनिक
कानपुर
मो.: 8808538976

प्रत्येक अक्षर का संबंध किसी न किसी देवता से अवश्य होता है और देवता एक सर्वोच्च शक्ति है जो मानव चेतना से और अधिक सर्वोपरि है अतएव मानव देवता को अपना आदर्श मानता है और उससे परम अनुरोध के साथ निवेदन करता है 'प्रभु कृपा करो यह भांति सब तज भजन करूउं दिन–राति' थी और उसे प्रसन्न करने की भरसक प्रयास करता है सच पूछिए तो देवता परमात्मा के अंश रूप में है ईश्वर जीव अंश अविनाशी जैसे प्राणियों की रक्षा, उनके पालन और उनके कष्टों का निवारण करने के लिए उस परमात्मा ने एक दिव्य शक्ति के रूप में जन्म दिया है। कभी–कभी तो मानव भी इतना सर्वोपरि हो जाता है कि वह देव तुल्य मान लिया जाता है उसकी गणना भी ब्राह्म–तत्वान्वेषी के रूप में की जाती है। यद्यपि परमात्मा एक है, ब्रह्म एक है– 'एको ब्रह्मा द्वितीयो नास्ति। किंतु विप्राः बहुधा वदंति' के अनुसार विद्वान लोग उसे अनेकों रूप में देखते हैं अपनी सुविधा के अनुसार अनेक संप्रदायों के साथ जुड़कर लोग नाना प्रकार से जिस देवता की उपासना करते हैं वह उनकी दृष्टि में भिन्न हो सकता है परंतु आपकी दृष्टि से वह वही ब्रह्म ही है। इसलिए कहा गया है:–

सर्व देव नमस्कारं केशवं प्रति गच्छति, अर्थात् समस्त देवताओं की उपासना एक परम ब्रह्म को ही समर्पित होती है, जैसे छोटी–छोटी नदियां एक बड़ी नदियों से मिलकर समुद्र में जा करके मिलती हैं, उसी प्रकार से देवता जिन्हें अनेक प्रकार के मंत्रों से पूजा जाता है, उनकी उपासना की जाती है, प्रसन्न किया जाता है, वे सभी उस परमपिता के अंश हैं और उनकी समस्त उपासना के रूप में मान्य है भगवान वेदव्यास के मतानुसार हम अपने स्वर और व्यंजन के समूह को देवताओं के समूह में पृथक–पृथक रूप में मुख्यतः पाँच वर्गों में विभाजित कर सकते हैं – अ, आ, ए, क, च, ट, त, प, य और ष ये वायु देवता से सम्बन्धित है; इ, ई ऐ, ख, छ, ठ, थ, फ, र और स ये अग्नि–देवता से; उ, ऊ, ओ, ग, ज, ड़, द, ब, ल और ह ये पृथ्वी–देवता के हैं; ऋ, औ, घ, झ, ढ़, ध, भ, व, और ल ये चन्द्र देवता तथा लु, ङः, ञ, ण, न, म, क्ष और श ये सूर्य देवता से सम्बन्धित हैं।

(आ0भि0सू0 489 देखें।)

वर्गों के आधार पर इस प्रकार पाँच देवताओं को प्रदर्शित कर शास्त्रकारों ने वर्णों में और उद्यत आदि चार स्वरों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जातियों को भी प्रदर्शित किया है साथ ही यह भी कहा है कि वेदाध्ययन करने वालों को प्रदर्शित देवताओं एवं जातियों का ठीक–ठीक स्मरण भी रखना चाहिए यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी एकात्मता की चेतना प्राप्त करें और देवता एवं जातियां मिलकर अपने कार्यों को करें। वर्ण और जाति व्यवस्था पर आज प्रश्न–चिन्ह लग रहा है, परंतु इसके पीछे एक धार्मिक एवं आव्यवहारिक अनुशासन छिपा हुआ था। प्राचीन काल में शिक्षा का काफी महत्व था। गुरुकुल परंपरा में गुरु को जितना अधिक महत्व प्राप्त था, उतना किसी को नहीं। यहाँ

राजनीति का नामोनिशान भी नहीं था। अनुसंधान से ज्ञात होता है कि विज्ञान पंच–तत्व को अचेतन की संज्ञा देता था, किंतु ऋषि–महर्षि इन्हें चेतन देवता मानते रहे हैं। यह देवता तत्तद भूत पदार्थगत शक्तियाँ हैं। वैज्ञानिक इन शक्तियों को अपनी बुद्धि से उत्पन्न मानकर अहं भावना करते हैं, किंतु ऋषि–महर्षि दैवीय शक्ति मानकर अलौकिक तत्व पर विश्वास रखते हैं। वस्तुतः देखा जाए तो मानव का बुद्धि व सातिशय होता है और देवी शक्ति का बल निरतिशय रहता है। आज की युवा पीढ़ी को चिंतन करना चाहिए कि एक वैज्ञानिक जिन पांच भूतों के आश्रय से अपनी बुद्धि का उपयोग कर एक नुक्सा या फार्मूला तैयार कर हमें देते हैं, उस नुक्से फार्मूले के अनुसार हम ठीक–ठीक प्रयोग कर फल की प्राप्ति करते हैं हमारे प्रयोग के बिना फल की प्राप्ति संभव नहीं।

हमारे चिरंतन महर्षि भी शब्दात्मक वेद सन्दर्भ और वेद मंत्र के अक्षरों में पांच भूत पदार्थों को देवता रूप देकर अनेक प्रयोग प्रतिपादित किए हैं, जिनके जप, परायण, हवन आदि के प्रयोगों से फल प्राप्त होते रहे हैं विश्व में एक भी मानव ऐसा नहीं हो सकता है, जो वायु अग्नि, भूमि, इन्दु और सूर्य की ऊर्जा से लाभान्वित नहीं होना चाहता हो। इनको अचेतन मानकर इनके शक्ति द्वारा बुद्धि से पदार्थों का आविष्कार करने अथवा चेतन मानकर उन शक्तियों को पहचानकर प्रयोग में लाने, दोनों में अंतर है। एक में भौतिक कला का प्रधान्य है और दूसरे में आध्यात्मिकता का प्रथम विज्ञान बनता है, तो दूसरा प्रज्ञानवान। इसकी विवेचना तैत्तिरीय उपनिषद् में की गयी है। अन्नमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय, इन पाँच कोसों का निरूपण करते हुए कहा गया है:–

विज्ञानं यशं तनुते । कर्माणि तानुतेऽपि च।
विज्ञानं देवाः सर्वे। ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते।
विज्ञानं ब्रह्म चेद्वेद। तस्माच्येन्न प्रमाद्यति।
शरीर पाप्मानो हित्वा। सर्वान्कामान्समश्नुत इति।

(तै0 आ0 8:2)

वर्णमाला के क्रम में यदि हम 'राम' शब्द की व्याख्या करते हैं तो 'राम' में 'रा' व म हो अक्षरों का बोध होता है। परंतु 'र' दीर्घ होने के कारण उसमें 'अ' का रहस्य छिपा हुआ है– इस प्रकार तीन अक्षर उच्चारण में प्रकट होते हैं। ये तीनों अक्षर ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश को परिचायक हैं। ब्रह्मा जो सृष्टि का सृजन करते हैं, विष्णु जो पालन करते हैं और महेश संहार के प्रतीक हैं। 'रा' सहस्त्रार से और 'म' कंठ चक्र से उद्धत होते हैं। 'र' अग्नि तत्व है और 'म' जीव तत्व, प्राण तत्व। जैसे ही परमात्मा की अग्नि रूपी उर्जा, वैसे ही 'म' अर्थात प्राण तत्व जागृत हो जाता है और शरीर में परमात्मा/ईश्वर अंश के रूप में विराजमान हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में;–

''ईश्वर–अंश जीव अविनाशी है
चेतन अमल सहज सुख राशि''

शरीर में यही प्राण तत्व परमात्मा का अंश है, वही चेतना का प्रतिबिम्ब है और उसे सहज रूप में सुख की राशि प्राप्त होती है अर्थात सुख की प्राप्ति ईश्वर से जुड़ने के बाद ही संभव है। क्योंकि जब उसका अंश मूल तत्व से जुड़ जाता है तब अपरिचित सुख की अनुभूति होने लगती है। इसलिए राम सुख के कारण हैं, जो सत–चित–आनंद रूप में सच्चिदानंद स्वरूप हो कर संपूर्ण प्राणियों को सुख की अनुभूति कराते हैं। गोस्वामी जी के शब्दों में :–

ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा।
उभय बेष धरि की सोइ आवा।।

भगवान शिव के मुखार से भी गोस्वामी जी पार्वती के संबोधन में कहला देते हैं:–

सोई मम इष्ट देव रघुवीरा।
सेवत जाहि सदा मुनि धीरा।।

हे देवी यह मेरे इष्ट देव हैं, जिनका स्मरण नित्य सदा धरि मुनि किया करते हैं अतः राम केवल दशरथ के पुत्र नहीं, राम केवल स्मरण करने के लिए नहीं है, अपितु राम ब्रह्म है तथा मानव कल्याण के लिए अनेकानेक रूपों में अवतरित होते रहे हैं।

र और म दो अक्षर मानव कल्याण के साधन हैं। पूज्य सत्य साईं बाबा ने कहा था – राम नाम की दो लकड़ियों को अपने हृदय में निरंतर रगड़ते रहो, तो उससेः– अग्नि पैदा होगी–वही उर्जा है, वही प्राण हैं और उसी से सभी का कल्याण होगा– रमन्ते योगिनीः यस्मिनः स रामाः। जिसमें योगी लोग रम जाते हैं वही 'राम' है गोस्वामी तुलसीदास जी की श्री रामचरितमानस का सम्यक अध्ययन करें, तो सर्वत्र आपको राम ब्रह्म के ऊपर लोक–कल्याण की अवधारणा को लिए हुए दृष्टिगत होते हैं। यही कारण है कि जन–मानस में जन–मानस की एक–एक चौपाई का मंत्रवत आदर प्राप्त है। राम–राम कहते रहो, धरे रहो मन धीर। ■

रूद्रवतार श्री हनुमान

एक बार भगवान शंकर भगवती सती के साथ कैलाश पर्वत पर विराजमान थे भगवान शंकर ने पति से कहा प्रिय जिनकी नमो को रजत कल मैं गदगद होता रहता हूं वही मेरे प्रभु अवतार धारण करके उनकी सेवा का सहयोग प्राप्त करना चाहता है लव में ही उससे वंचित क्यों रहूं मैं भी वही चलूं और उनकी सेवा करके अपनी जुग–जुग की लालसा मून करूं भगवान शंकर की या बात सुनकर सती ने सोच कर कहा प्रिय भगवान का अवतार इस बार रावण को मारने के लिए हो रहा है रावण आपका अनन्य भक्त है यहां तक कि उसके अपने सिरों को काटकर आप को समर्पित किया है ऐसी स्थिति में आप उसको मारने के कार्य में कैसे सहयोग दे रहे हैं इतनी बातें सुनकर शंकर जी हंसने लगे और कहा देवी जैसे रावण ने मेरी भक्ति की है वैसे ही उसने मेरे एक अंश की अवहेलना भी तो की है।

तुम जानती हो कि मैं जा रहा स्वरूप में रहता हूं जब उसने अपने 10 सिर अर्पित कर मेरी पूजा की थी तब उसने मेरे एक अंश को बिना पूजा किए ही छोड़ दिया था अब मैं उसी अंश से उसके विरुद्ध युद्ध करके अपने प्रभु रामावतार जी विष्णु की सेवा कर सकता हूं।

जेहि शरीर रति राम सो, सोई आदरही सुजानी रुर देह तजि वानर थे हनुमान यह परमात्मा की विशेष कृपा है कि मुझे जिंदगी में आम आदमी के नजदीक रहने का अवसर उनके विचारों की का उसके साथ एक परिवारिक सहयोग के रूप में काम करने का मौका दीया जीवन का मैंने सौंप दिया सब भार तुम्हारे हाथों में उत्थान पतन अब मेरा है गुरुदेव आपके हाथ में मंगलवार को महावीर से जो भी नहीं लगाया कटिया मंगल जीवन भक्तों मंगल में हो जाए जो पड़ता है पवित्र हो करनी तो हनुमान चालीसा शनि की दृष्टि कभी बसंती परिचित रहे हमेशा बजरंग पढ़ने से होता सीताराम सहाय करें या मंगल जोड़ी भक्तों मंगल में हो जाए। ■

सुनील श्रीवास्तव
जौनपुर

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

हनुमत प्रेम – हनुमत निष्ठा

"अक्षरों, अर्थसमूहो, रसो, छंदों और मंगलों को करने वाली सरस्वती जी और गणेश जी की मैं वंदना करता हूं"
= श्री रामचरित मानस–बाल काण्ड (१.१)

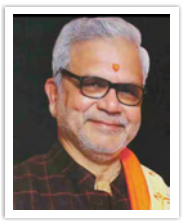

उमेश टंडन
गुरुग्राम, हरियाणा
मो.: 8826347978

हनुमान मेरे संसार
हनुमान हैं मेरा प्यार
हनुमान ही पालनहार
हनुमान ही हैं व्यवहार।

हनुमान साथ तो बेड़ा पार
उड़ कर पहुंचे सागर पार
न कुछ सोचा एको बार
और पहुंचे लंका के द्वार
नहीं था रत्ती भर भी अहंकार।

सेवा भाव को मन में रखकर
निष्ठा को थे कभी न भूलें
भक्ति भरी थी रग रग में उनके
कभी नहीं था सीखा गिरना
और न ही था कभी भी डरना।

राम काज को मन में रखकर
जय श्री राम बोल बोल कर
पहुंच गए लंका के अन्दर।

ललक एक ही थी मन में
पहुंचूं जल्दी और दरस मैं पाऊं
अपनी मैया का
विभीषण बने तभी सहारा
और सुझाया मैया का द्वारा।

पहुंचे अशोक वाटिका के अन्दर
सहम गए जब देखा मंज़र
कैसे बैठीं सीता मैया
इतनी बेबस, इतनी बेचैन।

जा बैठे बजरंगी मेरे
पेडों के पत्तों में छुपकर
जैसे ही वो मौका आया
प्रभु मुद्रिका को था गिराया।

माता ने देखी जब मुद्रिका
पल भर तो विश्वास न आया
तब बोले बजरंगी खुलकर
।।"राम दूत मैं मात जानकी
सत्य सपथ करुणा निधान की"।।

जा बैठे मैया चरणों में
सारी अपनी बात बताकर
मैया का विश्वास वो पाकर
माता का आशीर्वाद वो पाकर
बोले बदला तो मैं ले ही लूंगा
और वाटिका को नष्ट करूंगा।

माता से फिर मांगी अनुमति
दिखा दिया अपना बल लंकापति को
उजाड़ डाली सब अशोक वाटिका
आने न दी कुछ भी आंच मैया पर।

सुनकर रावण, क्रोधित होकर
बुला लिया पवन पुत्र को भरी सभा में
पूंछा उनसे उनका परिचय
बुद्धि और विवेक के पालनहार
अंजनि पुत्र ने दे डाला अपना
और
प्रभु श्री राम का परिचय
बहुत समझाया पर रावण को कुछ भी समझ न आया ।

रावण मद में अपने चूर था इतना
नहीं समझ पाया वो कुछ भी
महावीर की कोई भाषा
बजरंगी का कोई इशारा
और अपना ही काल बुलाया।

सिंह की से दहाड़ लगा कर
दे डाला आदेश सभा को
पूंछ जलाकर इस बंदर की
दिखा दो इसको ताकत सब हमारी।

फिर हनुमत ने बुद्धि लगाई
और थी अपनी पूंछ बढ़ाई
फिर तो पूरी लंका जलाई
फिर भी मां सीता और विभीषण जी पर आंच न आई।

मां सीता को जाकर शीश नवाया
अनुमति मांगी वापस जाने की
और
प्रभु साथ वापस आने की
प्रभु साथ वापस आने की

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

महिलाओं ने महादेवा, कुंतेश्वर व पारिजात में किया पूजन-दर्शन

राजधानी के इंदिरा नगर निवासी दो दर्जन से अधिक शिव भक्त महिलाओं ने बाराबंकी जिले के रामनगर क्षेत्र में स्थित भगवान भोलेनाथ के प्रसिद्ध महादेवा मंदिर में महाभारत काल के दौरान महाराज युधिष्ठिर द्वारा माता कुन्ती की पूजा के लिए स्थापित शिवलिंग के दर्शन व पूजन किया। भक्त महिलाओं की टोली कुंतेश्वर धाम जाकर पूजा पाठ किया और परिसर में एक साथ लगे (पीपल, पाकड़, बरगद महुआ व आम) पंचवटी के दर्शन किये। ढ़ोल मंजीरे के साथ महिलाओं ने वहीं बरामदे में भजन कीर्तन भी किया. समुद्र मंथन में निकले अद्भुत पारिजात वृक्ष के दर्शन कर मनोकामना पूर्ति के लिए चुनरी बाँधी।

इंदिरा नगर निवासी शिवभक्त नीलम दीक्षित की अगुवाई में दो दर्जन से अधिक महिलाएं बुधवार की सुबह बस में सवार होकर कीर्तन गाते व ढोल–मंजीरा बजाते

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

के दर्शन का पुण्य लिया। भक्त महिलाओं ने मनौती मानी और चुनरी भी बाँधी।

राजधानी से महादेवा गयी शिव भक्तों की टोली में श्रीमती नीलम दीक्षित, सीमा दीक्षित,शिल्पी तिवारी,अनुजा भार्गव, बेबी पाण्डेय, किरन, शशी गुप्ता, सत्या, रूबी राय, किरन तिवारी, नीलम तिवारी, नीलम मिश्रा, अनुराधा,सीमा देवी, गुड्डी, पूनम पाण्डेय, मधू, एन्जल, ओम, पायल, प्रियम दीक्षित आयुष पाण्डेय अमित कुमार आदि शामिल रहे। महिलाओं की टीम के साथ शिव भक्त व हनुमत कृपा पत्रिका के सम्पादक नरेश दीक्षित, पत्रकार रमेश शर्मा व हनुमान जी के परम् भक्त आलोक श्रीवास्तव भी शामिल रहे। ■

महादेवा पहुंची। महिला टोली ने मंदिर परिसर में जल, अक्षत, फूल, वेलपत्र, धतूरा आदि लेकर महाभारत कालीन शिवलिंग की पूजन अर्चन किया। महादेवा से करीब 14 किमी. दूर स्थित कुंतेश्वर धाम में चौकोर शिव शीला के दर्शन कर पूजा की. वहीं बरामदे में सभी महिलाओं ने ढ़ोल मंजीरे के साथ घंटे भर भजन कीर्तन किया. कहा जाता है कि यहाँ माता कुन्ती का वास है. इसीलिए उस स्थान पर भक्तों को बहुत शांति मिलती है. वहाँ से तीन किमी दूर दर्शनीय स्थल पारिजात जाकर मंदिर में विराजमान सीताराम जी को प्रणाम किया। पौराणिक व ऐतिहासिक पारिजात वृक्ष

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

हनुमानजी की सेवा ही जीवन का संकल्प

आलोक श्रीवास्तव
लखनऊ
मो.: 9839833343

मेरे पिता स्वर्गीय महादेव प्रसाद श्रीवास्तव हनुमानजी के अनन्य भक्त थे और मेरे जन्म से पहले दो बहने हुईं लेकिन बच नहीं सकीं। लोगों ने पिताजी को राय दी कि आप कोई बच्चा गोद ले लीजिए लेकिन पिताजी ने कहा कि नहीं, हनुमानजी से पुत्र का आशीर्वाद मांगूगा, वह मुझे पुत्र देंगे ऐसा मेरा विश्वास है। पिताजी ने हनुमानजी से प्रार्थना की उनकी अराधना की और मंगलवार को मेरा जन्म हुआ। जन्म से ही हनुमानजी का आशीर्वाद बना है। पिताजी बताते हैं कि जब एक साल का था तब एक बार मुझे तेज बुखार आया और मेरा बचना मुश्किल हो गया लेकिन हनुमानजी ने बचा लिया। बड़े होने पर पिताजी कहते थे कि पूजापाठ व हनुमानजी की आराधना किया करो लेकिन मेरा मन पूजापाठ मे नहीं लगता था। फिर भी रोज हनुमान चालीसा का पाठ करता था। यह क्रम कभी–कभी टूट भी जाता था। फिर धीरे–धीरे हनुमान चालीसा याद हो गई। पूजापाठ मुझसे नहीं हो पाता था। जीवन मे कई बार दुर्घटना हुई लेकिन हर बार बजरंगबली ने रक्षा की है और जान बचाई। एक बार लीवर में संक्रमण और पीलिया होने के वज़ह से गम्भीर हालत मे अस्पताल मे भर्ती होना पड़ा और गम्भीर होती स्थित देखकर डॉक्टर ने घर वालों से कहा कि इनके बचने के चांस सिर्फ दस पर्सेंट ही हैं और अब कोई चमत्कार ही इनको बचा सकता है। घर में बच्चे रोने लगे थे जब उनको ये पता लगा मेरी स्थिति ये थी कि मैं चल भी नहीं सकता था और बहुत कमजोर हो गया था हीमोग्लोबिन मात्र 3.5 ही रह गया था डॉक्टर ने बोला इनके शरीर मे खून बहुत कम बचा है इनको कैसे बचाया जाए सब परेशान थे लेकिन मैंने वहीं अस्पताल में बेड पर लेटे–लेटे ही हनुमान जी का स्मरण किया। हनुमान चालीसा का पाठ करता था और हनुमानजी से विनती करता था कि हे बजरंगबली रक्षा करो, बच्चे अभी छोटे हैं और मेरे सिवा उनका कोई नहीं रक्षा करो प्रभु। ऐसे ही रोज हनुमानजी से प्रार्थना करता था और धीरे–धीरे स्थिति में सुधार होने लगा और नौ दिन अस्पताल में रहने के बाद में पहले से स्वस्थ हो गया और गंभीर स्थिति से बाहर आ गया। डॉक्टर ने कहा कि अब स्थिति ठीक है, अस्पताल से उन्होंने डिस्चार्ज कर के घर पर ही आराम करने को बोला। तकरीबन दो

> जब पूजा करना शुरू किया तो मन पूजापाठ में लगने लगा और विचार आया कि मंगलवार को हनुमान मंदिर भी जाऊँ हनुमान मंदिर हर मंगलवार को जाने लगा फिर कुछ दिन बाद घर के छोटे पूजाघर को बदल कर बड़ा पूजाघर बनाया। पूजाघर में श्रीराम दरबार, शिव परिवार हनुमानजी की स्थापना की और नियमित रूप से पूजापाठ करने लगा। मन से आवाज आई कि हर मंगलवार को हनुमान सेतु मंदिर दर्शन करने जायें। हर मंगलवार को सुबह पूजा करके संकट मोचन हनुमान सेतु मंदिर जाने लगा।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

महीने बाद में पूर्ण रूप से स्वस्थ्य हो गया लेकिन हनुमान जी शक्ति नहीं समझ पा रहा था। मैं कायस्थ परिवार से हूं और मेरे यहां सभी माँसाहारी हैं। मैं भी माँसाहारी था सुबह नाश्ते मे अंडे खाना रात में चिकन खाना ये सब खानपान था। सिर्फ मंगलवार को ये सब नहीं खाता था। लेकिन जीवन की एक घटना ने बहुत परिवर्तन कर दिया। ये बात है 3 जून, 20 की है जो मीडिया और समाचार पत्रों की सुर्खिया भी बनी थी। ये घटना केरल की है जब एक गर्भवती हथिनी ने भूख लगने पर खेतों में रखा अनन्नास जैसे ही खाया उसमें किसानों द्वारा छुपा कर रखा गया बम हथिनी के मुंह में ही फट गया। गर्भवती हथिनी बुरी तरह दर्द को सहते हुए बिना किसी को नुकसान पहुंचाये एक नदी में जा कर खड़ी हो गयी। अगर वह चाहती तो किसी की जान भी ले सकती थी मगर वह असहनीय पीड़ा को सहते हुए चुपचाप तीन दिन नदी में खड़ी रही और अंततः उसकी मृत्यु नदी में ही हो गयी। इस घटना ने अंदर तक झकझोर दिया और उस रात सपने में वह हथिनी दिखाई दी। उसकी पीड़ा को महसूस किया और अंदर तक हिल गया। मन में विचार आया कि बेजुबान गर्भवती हथिनी असहनीय दर्द को सहते हुए बिना किसी की जान लिए अपनी प्राणों की आहुति दे दी और हम इंसान अपनी भूख मिटाने, स्वाद और सेहत बनाने के नाम पे बेजुबान जानवरों को मार कर खाते हैं। कितना निंदनीय पाप है। मन में परिवर्तन आया और प्रण किया कि अब कभी मांसाहार नहीं करूंगा और शुद्ध शाकाहारी हो गया। मन में जानवरों के प्रति दया का भाव उत्पन्न हो गया और कालोनी में प्रतिदिन कुत्तों को बिस्कुट आदि खिलाना शुरू कर दिया। गाय माता को भी बिस्कुट रोटी खिलाना शुरू कर दिया। मगर पूजापाठ नहीं करता था न ही मंदिर जाता था। जबसे मांसाहार छोड़ा तबसे धीरे–धीरे मन में पूजापाठ की भावना जगने लगी। फिर कभी–कभी पूजा करने लगा लेकिन वह निरंतर नहीं होती थी। जब पूजा करना शुरू किया तो मन पूजापाठ में लगने लगा और विचार

आया कि मंगलवार को हनुमान मंदिर भी जाऊँ हनुमान मंदिर हर मंगलवार को जाने लगा फिर कुछ दिन बाद घर के छोटे पूजाघर को बदल कर बड़ा पूजाघर बनाया। पूजाघर में श्रीराम दरबार, शिव परिवार हनुमानजी की स्थापना की और नियमित रूप से पूजापाठ करने लगा। मन से आवाज आई कि हर मंगलवार को हनुमान सेतु मंदिर दर्शन करने जायें। हर मंगलवार को सुबह पूजा करके संकट मोचन हनुमान सेतु मंदिर जाने लगा। अब प्रभु श्रीराम के आशीर्वाद से प्रतिदिन नियमित रूप से सुबह हनुमानजी की पूजा अराधना करता और भोग लगाता हूँ। आरती करता हूं जिससे मन को शांति मिलती है। खुद पर आश्चर्य होता है कि इंसान जो कभी मांसाहारी था पूजापाठ नहीं करता था मंदिर नहीं जाता था उसको आराध्य पवनपुत्र हनुमानजी ने बदल दिया और अपनी शरण में ले लिया। अब मैं हनुमंत दास बन चुका हूँ और जब तक सांसे चलेगी, जीवन है वह प्रभु बजरंगबली की सेवा आराधना में ही लगा रहेगा। मुझ जैसे तुच्छ इंसान को प्रभु हनुमानजी ने रास्ता दिखाया और जीवन का सही अर्थ समझाया। बोलो सियावर रामचन्द्र की जय पवन सुत हनुमान की जय। ■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

संकट मोचन हनुमान मंदिर में भक्तों ने किया सुंदर कांड

आध्यात्मिक संस्था संकट मोचन फाउंडेशन के तत्वावधान में हनुमतपुरम् में स्थापित सिद्धिपीठ संकट मोचन हनुमान मंदिर में भक्तजनों ने संगीतमय सुंदर कांड का पाठ किया। पावन सावन माह होने के नाते श्रद्धालु जनों ने करीब दो घंटे ॐ नमः शिवाय का जाप भी किया। मंदिर का संचालक ने सुंदर कांड पाठ व ॐ नमः शिवाय महामंत्र जाप के बाद सभी भक्तों को मिठाई, फल व मेवे का प्रसाद वितरित किया।

संकट मोचन फाउंडेशन के सचिव अशोक द्विवेदी (एडवोकेट) ने बताया कि प्रभु श्रीराम व हनुमान जी की कृपा और फाउंडेशन के अध्यक्ष स्वामी रामानंद सरस्वती (अमेरिका) के आशीर्वाद से बीते 18 साल से सुल्तानपुर जिले के कूड़ेभार क्षेत्र के हनुमतपुरम् (पिपरीसाईंनाथपुर) में स्थित संकट मोचन हनुमान मंदिर में हर मंगलवार व शनिवार को भक्तजनों द्वारा सुंदर कांड का सस्वर पाठ किया जाता है। उन्होंने बताया कि सावन माह में मंदिर में दर्शन–पूजन करने वाले भक्त बढ़ जाते हैं. दर्जनों महिलाएं व पुरुष प्रतिदिन मंदिर में पूजा के बाद ही जल ग्रहण करते हैं। श्री द्विवेदी ने बताया कि हनुमान जी का यह मंदिर वर्ष 2003 में हनुमान जी के परम् भक्त व अमेरिका में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रामा. एस. द्विवेदी (आध्यात्मिक नाम स्वामी रामानंद सरस्वती) ने बनवाया था।

मंदिर के व्यवस्थापक व पुजारी अनिल द्विवेदी का कहना है कि ज़ब से मंदिर में हनुमान जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हुई है तब से आज तक कभी सुबह –शाम की आरती बाधित नहीं हुई। मंदिर में हनुमान जी के अलावा, गणेश जी राम दरबार, शिवलिंग, राधा कृष्ण मूर्तियां भी स्थापित हैं. क्षेत्र के भक्तजन प्रभु दर्शन व पूजन भजन के लिए मंदिर में आते रहते हैं. उन्होंने बताया कि हनुमान जयंती, रामनवमी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, महाशिवरात्रि, नवरात्रि आदि विशेष अवसरों पर मंदिर में खास आयोजन भी होते हैं जिसमें सैकड़ों श्रद्धालु शामिल रहते हैं।■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

यूपी-उत्तराखंड में होगी 'बाबा नीब क

फीचर फ़िल्म के पहले पोस्टर का सभी धामों में हुआ विमोचन

निर्माता–निर्देशक–कहानीकार शरद सिंह ठाकुर और निर्माता–कहानीकार व बाबा जी की अनन्य भक्त श्रीमती कनक चंद द्वारा विश्व के महान संत और हनुमान जी के अवतार बाबा नीब करौरी महाराज जी के जीवन पर बाबा जी की प्रेरणा से पहली बायोपिक फिल्म बनाई जा रही है।

'बाबा नीब करौरी महाराज' फिल्म के पहले पोस्टर का विमोचन करते उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी। साथ में निर्माता–निर्देशक शरद सिंह ठाकुर व निर्माता श्रीमती कनक चन्द

दोनों निर्माताओं ने फीचर फिल्म के पहले पोस्टर का कैंचीधाम के प्रबंधक विनोद जोशी, भक्तिधाम नौकुचियाताल के व्यवस्थापक गजेंद्र सिंह बिष्ट, सिद्धि माई के पुत्र दिनेश साह, पुत्री श्रीमती गीता साह, हल्द्वानी श्री आनंद आश्रम वृद्धाश्रम संस्था के संस्थापक टी.एस. रावत, हनुमान मंदिर बाबा नीब करौरी आश्रम वीरभद्र ऋषिकेश के ट्रस्टी रबीन्द्र कुमार जोशी (रब्बू दा), परमार्थ निकेतन ऋषिकेश के प्रमुख स्वामी चिदानन्द सरस्वती, वृन्दावन नीब करौरी आश्रम के मौनीबाबा और व्यवस्थापक शर्मा जी, आगरा में बाबाजी की बेटी श्रीमती गिरिजा भटेले उनके दामाद जगदीश भटेले, पायलट संदीप भटेले (बॉबी), अनूप कुमार शर्मा व श्रीमती विमलेश शर्मा, तथा बाबा जी की जन्मस्थली अकबरपुर बाबा नीब करौरी आश्रम के पुजारी अवधेश शर्मा, बाबा जी की तपोस्थली नीब करौरी धाम (नीब करौरी गांव) के महंत त्यागी जी महाराज और पुजारी राम लखन बाजपेयी, सांडी आश्रम

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

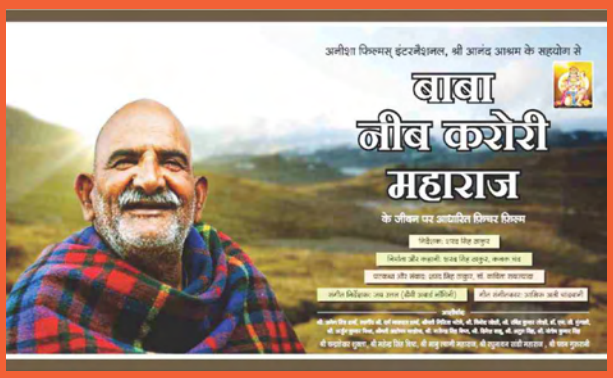

रौरी महाराज' फिल्म की शूटिंग

लखनऊ स्थित हनुमान सेतु मन्दिर परिसर में फिल्म के पोस्टर का विमोचन करते पूर्व सचिव डॉ. शंकर लाल कपूर व अन्य।

हरदोई के संस्थापक स्वामी रंगनाथन सांडी महाराज, बाबा जी के अपने लालघर (4 चर्च लेन) प्रयागराज में पूज्यनीया अशोका दीदी, हनुमान सेतु बाबा नीब करौरी आश्रम लखनऊ के मुख्य पुजारी भगवान सिंह बिष्ट, ट्रस्टी जीवन पांडे, डॉ श्याम लाल कपूर, बिल्लू रैना, नरेश दीक्षित, रवि सिंह, प्राचीन संकट मोचन हनुमान सेतु मन्दिर एवं बाबा नीबकरोरी तपोस्थली के मुख्य पुजारी आशीष शास्त्री लखीमपुर खीरी गोला गोकरन

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

नाथ मंदिर के सुशील पांडेय, आदि सभी सम्मानित जनों के हाथों से लांच किया गया।

मुख्यमंत्री आवास कार्यालय में उत्तराखंड मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पोस्टर सार्वजनिक करते हुए शरद जी एवम कनक जी को फ़िल्म बनाने के पुनीत कार्य की पूर्ण सफलता के लिए बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वह स्वयं भी महाराज जी के परम भक्त हैं। आज समाज को बाबा जी के जीवन के बारे में बताने का यह सबसे प्रभावशाली माध्यम है। बाबा जी के जीवन पर फ़िल्म को बनाये जाने का यह सबसे सही समय है।

पोस्टर लॉच कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के वरिष्ठ प्रमुख निजी सचिव के.के. मदान, मुख्यमंत्री के पूर्व निजी सचिव कपिल चौहान (वर्तमान निजी सचिव उत्तराखंड शासन), मुख्यमंत्री के अपर प्रमुख सचिव अभिनव कुमार, अपर सचिव व महानिदेशक सूचना रणबीर सिंह चौहान, सचिव उत्तराखंड शासन हरीश चंद्र सेमवाल, बाबा जी के अनन्य भक्त अनिल मुनगली, दीप मुनगली, अधिवक्ता मनीष चंद, अधिवक्ता रमेश पांडे, अधिवक्ता सौरभ पांडे, भगवान माजिला, संतोष कुमार सिंह, उत्तमानंद, पवन मनी, प्रदीप साह भैय्यूजी, उमेश तिवारी, मेजर जनरल प्रकाश चंद्र सिंह खाती, श्रीमती रितु खाती, श्रीमती कुसुम शर्मा, श्रीमती दीपा कांडपाल, पंडित जगदीश पांडे, श्रीमती अनिता व अश्विनी कोचर, कमल

कैंची धाम नैनीताल में फिल्म के पोस्टर का विमोचन करते प्रबन्धक विनोद जोशी व अन्य।

बोहरा, डॉ कविता रायजादा, आर.पी. रायजादा, पीयूष महाराज, सतीश ओबरॉय, यतीश वत्स, उदयन शर्मा, अवदेश शर्मा, मनोज मिश्रा, पंकज पाठक, मुन्ना लाल वार्ष्णेय, अर्जुन मिश्र, चंद्र शेखर शुक्ल, उमेश राजपूत, अनिल मिश्रा, श्रीमती सत्या पांडे, अतुल सिंह, चंद्रप्रकाश पांडेय, चित्रगुप्त वार्ष्णेय, नीरज कपूर, पंडित अतुल पांडेय, पंडित श्याम पांडेय, श्रीमती नीलिमा व राजीव यादव, लोकेश शर्मा, आदि सभी ने अपने स्थानों और धामों में शरद सिंह ठाकुर और श्रीमती कनक चंद के साथ टीम वर्क में पोस्टर को सार्वजनिक किया।

शरद जी ने कहा कि बाबा नीब करौरी महाराज के जीवन पर आधारित बायोपिक फिल्म देखकर श्रद्धालु भक्तजन और समस्त विश्व बाबा के जीवन दर्शन कर

लखनऊ में गोमती के किनारे बाबा जी द्वारा बनवाये हनुमान मन्दिर में आशीर्वाद लेते फ़िल्म के निर्माता–कहानीकार व अन्य

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

उनकी लीलाओं और महानता को जान पाएगा। फ़िल्म को बाबा के बचपन से लेकर वृंदावन में समाधि लेने तक फिल्माया जाएगा और फिल्म की शूटिंग उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के अलग–अलग स्थानों पर की जाएगी।

श्रीमती कनक ने बताया कि बाबा जी कलयुग के भगवान हैं जो सभी भक्तजनों के कष्टों को दूर करते हैं। अभी सभी बाबा जी के भक्त व श्रद्धालुओं के परिवार और समाज का हर व्यक्ति फ़िल्म के पर्दे पर आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं यह बहुत बड़ा सौभाग्य है कि महागुरु बाबा जी की फ़िल्म निर्माण का सौभाग्य निर्देशक शरद सिंह ठाकुर के साथ प्राप्त हुआ है। इसलिए बाबा जी कृपा है और वह शरद जी की सदा आभारी रहेंगी।

फ़िल्म की कहानी संयुक्त रूप से शरद सिंह ठाकुर और श्रीमती कनक चंद द्वारा बनाई गई है और फिल्म की पटकथा और संवाद शरद सिंह ठाकुर और डॉ. कविता रायजादा द्वारा लिखे गए हैं।

फ़िल्म के म्यूजिक डायरेक्टर अमेरिका के ग्रेमी अवॉर्ड नॉमिनी जय उत्तल है तो वही गीतों को अपने सुरेले संगीत से भारत के प्रसिद्ध संगीतकार संगीत आसिफ अली चंदवानी ने सजाया है। फिल्म में डायरेक्टर ऑफ फोटोग्राफी नारायण आर. दीक्षित होंगे। लखनऊ से नरेश दीक्षित मीडिया कॉर्डिनेटर हैं।

ऋषिकेश के परमार्थ निकेतन के प्रमुख स्वामी चिदानंद सरस्वती फिल्म के पोस्टर का विमोचन करते हुए।

नीब करौरी महाराज की यह फ़िल्म उनके परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों, भक्तजनों व शुभचिंतकों के सहयोग और आशीर्वाद से निर्मित की जा रही है। फ़िल्म की पूरी टीम को इस पुनीत कार्य के लिए उनके द्वारा बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की हैं

बता दें कि निदेशक शरद सिंह ठाकुर की जरा संभल के, ग्रीन सिग्नल, डेथ ऑफ वाटर और अलाइव अन्य सभी फिल्मे पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। उन्होंने कई डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म और एड फिल्में बनाई हैं। वर्तमान में नागालैंड की 16 जनजातियों पर फ़िल्म बनाने वाले वह पहले व्यक्ति हैं। उन्होंने समाजिक विषयों को ही अपना आधार बनाया है। साथ ही समाजिक कार्यो में भी सदैव आगे रहते हैं।

फिल्म के पोस्टर का विमोचन करते नीब करौरी आश्रम फर्रुखाबाद के व्यवस्थापक त्यागी जी महाराज।

वही तीलू रौतेली उत्तराखंड राज्य पुरस्कार प्राप्त श्रीमती कनक चंद सामाजिक कार्यों के लिए 34 पुरस्कारों के साथ साथ दो राज्य पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है दिल्ली में सामाजिक कार्यो में सदा एक्टिव रहती हैं। वर्तमान में बाबा नीब करौरी महाराज जी की प्रेरणा से हल्द्वानी में गरीब बेसहारा बुजुर्गो के लिए निःशुल्क वृद्धाश्रम संचालित कर रही हैं।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

लखनऊ के हनुमान सेतु मन्दिर परिसर में हनुमत् कृपा पत्रिका का विमोचन करते फिल्म के निर्माता–निर्देशक शरद सिंह ठाकुर व निर्माता श्रीमती कनक चन्द व अन्य।

डॉ कविता रायजादा द्वारा 11 इंटरनेशनल 60 नेशनल अवॉर्ड प्राप्त किये हैं। उनका सदी की 100 महिलाओं में नाम आता है। वह बेहतरीन लेखिका है और आगरा दयालबाग यूनिवर्सिटी में कार्यरत हैं।

निर्माता टीम शरद जी और कनक जी, बाबा नीब करौरी महाराज जी के ज्येष्ठ पुत्र अनेग सिंह शर्मा और बाबाजी के पोते डॉ धनन्जय शर्मा से अनुमति लेकर अकबरपुर बाबाजी के जन्मस्थल उनके घर गए और जहाँ से बाबाजी अपना सारा कार्य करते थे। वहां के दर्शन किये। फिर बाबा नीब करौरी मंदिर अकबरपुर में फ़िल्म पोस्टर को महाराज जी की प्रतिमा के सम्मुख भक्ति भाव पूर्वक रखा। यह पल वास्तव में अदभुत और विलक्षण अनुभूति भरा था। जहाँ ऊर्जा का अति संचार था और प्रेम आस्था ईश्वरीय लीलाओं से घिरा चारों ओर अकथनीय आंतरिक आनंदायक अनुभूतियों और समर्पण भाव से परिपूर्ण दृश्य था।

डॉ धनन्जय शर्मा जी ने अपनी और पिता जी की ओर से निर्माता टीम को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बाबा जी के जीवन पर फ़िल्म बनने से उनको अति हर्ष हुआ है और यह फ़िल्म वास्तविक घटनाओं पर आधारित है इसलिए उनको भरोसा है कि बेहतरीन फिल्मांकन होगा। फिल्म निर्माण में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। शरद सिंह ठाकुर और श्रीमती कनक चंद दोनों ने परिवार के समस्त सदस्यों, बाबा जी के रिश्तेदारों, धामों के सभी ट्रस्टियों और ग्रामवासियों और भक्तजनों का हार्दिक धन्यवाद किया जिन्होंने पोस्टर सार्वजनिक करने में भूमिका निभाई।

इससे पूर्व नवम्बर 2020 को फ़िल्म यूनिट ने वृन्दावन में 'बाबू जी' स्वर्गीय धर्मनारायण नारायण से शिष्टाचार मुलाक़ात की थी और उनको फ़िल्म की प्रथम स्क्रिप्ट प्रदान कर फ़िल्म बनाने के लिए आशीर्वाद भी प्राप्त किया था। बाबू जी यह जानकर अति प्रसन्न हुए कि टीम मेहनत कर रही है और विश्वास से फ़िल्म बनाने के लिए दृढ़ निश्चित है। अतः उन्होंने भी फ़िल्म बनाने की अनुमति और सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं और आशीर्वाद टीम को दिया। आज हम सब उनको बहुत याद करते हैं। बाबू जी की अस्थि विसर्जन के लिए गए प्रयागराज में उनके बड़े दामाद त्रिलोक चन्द्र शर्मा और उनके छोटे दामाद सुनील कुमार रजोरिया से शरद सिंह और श्रीमती कनक चंद ने मुलाकात की और श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही आप दोनों को बाबा जी की फिल्म के बारे में अपने द्वारा किये गए कार्यों से अवगत कराया। दोनों ने खुशी व्यक्त की और फ़िल्म की सफलता के लिए आशीर्वाद और शुभकामनाएं दीं। ■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

मौन रूप में ही मौन प्रार्थनाएँ सुन ली

एल.एन. अरोड़ा
फरीदाबाद

मैं श्री मौनी माँ के सम्पर्क में 1987 से आया हूँ। उनसे मिलने से पूर्व ही स्वप्न में मुझे उनका दर्शन हो चुका था। जब साक्षात् रूप से दर्शन हुए तब मैं अचंभित था कि यही रूप तो मुझे सपनों में दिखा था। माँ के दर्शनों के बाद ही मुझे स्वप्न में ही फिर भव्य राम दरबार के दर्शन हुए जिसमें श्री हनुमान जी उठ कर बैठ रहे थे। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि अब कुछ अच्छा घटित होने वाला है। तब इतनी सामर्थ्य भी नहीं थी कि भागवत् का आयोजन करवा सकूं। पर इच्छा अवश्य थी, भागवत् करवाने की। श्री माँ का दिया हौसला व आशीर्वाद था कि हमारे घर फरीदाबाद में 2 बार भागवत् कथा का आयोजन हुआ और दिल्ली वाले घर में रामायण पाठ का आयोजन हुआ। जब भागवत् कथा का आयोजन हो रहा था, उन दिनों मेरे मन में एक प्रण था कि मैं 'पानी के प्लांट' पर कार्य करूँ। इच्छा बड़ी थी, पर सामर्थ्य नहीं थी। मन ही मन श्री माँ से प्रार्थना करता रहा। भागवत के पूर्ण हो जाने पर माँ की कृपा से मैंने जगह खरीदी, और आज 'पानी प्लांट पर सप्लाई पर सफलतापूर्वक कार्य कर रहा हूँ। तब से आज तक मुझे बिल्कुल भी परेशानी नहीं हुई।

शिवार्चन और बेलपत्री

एक बार दिल्ली से हम पाँच मित्र लोग जिनमें सुनील सिक्का माईसाहब भी थे, जागेश्वर के लिये रवाना हुए। वहाँ पर श्री माँ द्वारा पार्थिव पूजा का आयोजन किया जा रहा था। सभी लोग परस्पर इस बारे में चर्चा कर रहे थे, कि 'बेलपत्र' की कमी रह गई, अन्य सामग्री तो समुचित मात्रा में थी। सभी भक्त जन अन्य तैयारियों में व्यस्त थे। मे स्वयं ही सारे कार्य को स्वयं विशेष भक्ति भाव से आयोजित कर रही थी। तभी एक युवक ढेर सारी ताजी 'बेलपत्रियां' लाकर दे गया। वह व्यक्ति इतनी जल्दी में आकर चले गया कि सारे भक्त जन कुछ पूछा नहीं सके कि, यह 'बेलपत्रियां' लाने की प्रेरणा उन्हें कैसे मिली। वह व्यक्ति लाने की प्रेरणा उन्हें कैसे मिली। माँ तो बस मंद–मंद मुस्कुराती ही रही।

आज इतने वर्ष हो गये श्री माँ से मिले हुए, उनकी कृपा को मैंने पूर्ण रूप से महसूस किया है। आज भी जब कोई कष्ट होता है तो श्री माँ प्रत्यक्ष रूप से मार्ग निर्देशन कर देती हैं। ■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

भगवान कृष्ण की महिमा

भगवान कृष्ण की महिमा–
जिन चरणों के ध्यान से।
योगी मुक्ति पाते ।।
वो प्रभु सेवा भाव से।
सुदामा चरण धुलाते।।

कन्हैया की उलाहना–सुदामा के कान पकड़ कर कहते हैं–
कान पकड़ कर बोले कान्हा।
सुनो मित्र मेरी उलाहना।
ऐसा भ क्या द्वारका आना?
भावज को घर पर रख आना।।
तनिक अपना देखो तो हाल।
कृषकाय शरीर, है बिखरे बाल।।
तीस बरस क्या गये बीत।
भूला कृष्ण, भूला अतीत।।

मुख्य महल में प्रवेश सुदामा का–
मुख्य कक्ष में आ गये।
नन्दलाल के मित्र।।
रानियों संग लगा रहे।
श्याम सखा को इत्र।।

श्री कृष्ण के खेल–
कोतुक से देखें ऋषिकेश।
सुदामा की पोटली विशेष।।
हर्षित हो बोले दुखभंजन।
भावज ने भेजा है व्यंजन।।
इस पर मेरा पूर्ण अधिकार।
आज दिवस का यह आहार।।
लाज मुख से कहें सुदामा।
व्यंजन नही यह तन्दल।।
छीने पोटली अब कान्हा।
बात सुने ने बिल्कुल।।

श्री कृष्ण की महिमा–
अर्पण होता जिस केशव को।
छप्पन प्रकार का भोग।।
वो द्वारकानाथ खा रहे।
तन्दुल को मनोयोग।।
तन्दुल नही, यह अमृत एक।
भावज भेंट है उच्च।।
इसके सम्मुख व्यंजन अनेक।
मेरे लिये है तुच्छ।।

रूक्मिणी ने प्रभु को रोका–
तीन मुट्ठी जब खा चुके।
रूक्मिणी करें निवेदन।।
बोली हाथ पकड़ के।
बस करो गोकुलनंदन।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

सुदामा भगवान कृष्ण के रहस्य को न समझ सके। भगवान के तीन मुठ्ठी पर तन्दुल खा कर सुदामा को त्रिलोकी सम्पत्ति दान कर दी।

सरल सुदामा क्या जाने।
प्रभु लीला का सार।।
मित्र प्रेम से मुग्ध है।
बहु अश्रु की धार।।

कृष्ण से विदा माँगी सुदामा ने–

विदा माँग कर, हाथ जोड़।
रूँधे कण्ठ से भारी।।
दर्शन हुआ सफल, रणछोड़।
हरे कृष्ण मुरारी।।

नटवर कृष्ण भोले बन कर कहते है–

वृन्दावन का ग्वाला तो।
जाने न वस्तु मोल।।
फिर भावज की भेंट को।
कोई तुला सके न तोल।।

सुदामा का प्रस्थान एवं घर देखकर आश्चर्य–

आज विप्रवर खुश हैं।
कृष्ण से लिया न दाम।।
महत्वपूर्ण तो दर्शन है।
द्विज को इससे काम।।

चार दिवस की यात्रा।
ग्राम समीप जब आया।।
अचरज की थी मात्रा।
पलटे ग्रह की काया।।

सुदामा सोचते हैं कि मेरे, ग्रम से कोसो दूर भी महल नही है, शायद में भ्रमित हो पुनः द्वारका तो नहीं आ गया, पर शीघ्र उन्हें अपनी स्त्री के दर्शन होते है।

शायद मार्ग भूल गया।
सुदामा करे विचार।।
मित्र प्रेम ने ला दिया।
फिर द्वारका के द्वार।।

सुन्दर नारी साथ द्वारपाल।
आई महल के द्वार।।
अगवानी का पूरन थाल।
आरती को तैयार।।

अरे यह तो दारा है।
सुमुखी पूर्ण सुशीला।।
विचित्र प्रभु की माया है।
दिया महल सजीला।।

सुदामा कृष्ण की नटखट लीला समझ जाते हैं व प्रेम से ओत प्रोत और भीगे नयनों से कहते हैं–

नटवर तेरी यह लीला।
प्रबल प्रेम के पाले।।
दी हमें कुबेर कुंजिका।
बनकर ब्रज के ग्वाले।।

निर्भय जोशी

हनमत् प्राप्ति

हुई अति घोर तपस्या
ब्रह्मासन जब डोला।
प्रसन्न हुये शिव
अन्जना माँ से बोला।।
द्वादश वर्ष के तप का अर्थ
जानु सकल मै तोरा।
पवन पुत्र, सुतनु मनुँ
शिवरूप तजहुँ अब मोरा।।
पुनः शिव वन्दना, करे अन्जना
पुलकित मन, नेत्र सजल आये।
धन्य हे शिव, दयामय तुम
पुत्र बन, मोहे हरषाये।।

दोहे के स्वरः-

पवन देव की कृपा प्रधान।
अन्जना सुत भये हनुमान।।
जन–जन कहता बात समान।
अपार बली है वीर हनुमान।।
इसके बल का, क्या दे प्रमाण।
निखिल सूर्य को, कन्दुक मान
नित्य क्रीड़रात ये हनुमान।।
नवग्रह सब, इसके अनुकूल।
ज्ञात इसे, सब मंत्र–तंत्र।।
दिनकर की, आभा में देख।
स्वर्ण–तप्त, ये बाल विशेष।।
क्षण में लघु, क्षण में दीर्घ।
पवन गति से भी अति शीघ्र।।
गुरूकुल में इसकी पहचान।
सदा जपे ये राम नाम।।
राम मिलन को व्यग्र हनुमान।
रटने लगे जय जय राम।
बोले जब तक न देखऊँ राम।
अन्न जल का करूँ पयान।।
बात अन्जन जब ये जान।
मुख आई मधुर मुस्कान।।
सुन मेरे हनुमंत हठीले।
हठ छोड़, तनिक जल पी ले।।
रामायण के रत्न लाल।
रख माँ ने जब हस्तमाल।।
दशरथ सुत दोनों आयेंगे।
माँ जानकी संग लायेंगें।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

गुरु सेवा से ही प्रभु कृपा संभव

दिल्ली के महाराष्ट्र भवन में मनाई गयी गुरु पूर्णिमा

गुरु सेवा करके ही भक्त को प्रभु कृपा का आशीर्वाद मिलता है। गुरु के बताये सन्मार्ग पर आगे बढ़कर ही शिष्य मनोवांछित लक्ष्य तक पहुंच सकता है। गुरु की बात भगवान का संदेश मानकर सुनना और उसका अक्षरशः पालन करना चाहिए। गुरु हमेशा भक्त के हित के बारे में सोचता और कहता है। उसकी कही हर बात पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। यह बात श्री विराट भाग्योदय समिति (ट्रस्ट) ज़ेवर (उत्तर प्रदेश) के अध्यक्ष श्री मनु जी महाराज ने गुरु पूर्णिमा व गुरु पूजन पर्व पर दिल्ली स्थित नये महाराष्ट्र भवन में आयोजित कार्यक्रम में भक्तजनों को सम्बोधित करते हुए कही। श्री मनु महाराज ने कहा कि गुरु के प्रति पूरी निष्ठा व समर्पित भाव होना शिष्य के लिए जरूरी है। गुरु भक्त और भगवान के बीच वह कड़ी है जो एक को दूसरे से साक्षात्कार कराता है। बिना गुरु की कृपा के प्रभु का सामिप्य असंभव है। गुरु ही भक्त को योग, साधना और आध्यात्म के जरिये प्रभु के नजदीक ले जाता है और कभी कभी प्रभु दर्शन भी करा देता है।

कार्यक्रम में श्री मनु महाराज ने फोन पर केंद्रीय मंत्री नारायण राणे को आशीर्वाद दिया। नये महाराष्ट्र भवन के कार्यक्रम में मौजूद राजनेता सर्वश्री योगेश रमेश पाटिल (भिवंडी), संत कबीरनगर (उत्तर प्रदेश) के वरिष्ठ नेता मोहीबुल्लाह खां, जयपुर (राजस्थान) से आये राजा साहब तथा गुजरात व महाराष्ट्र से आये कई टेक्सटाइल उद्योग मालिक व न्यायपालिका से जुड़े अधिकारी आदि ने भी श्री मनु महाराज का सम्मान कर आशीर्वाद लिया। बाद में, महाराज जी ने सभी राजनेताओं को एक साथ भेजकर केंद्रीय मंत्री नारायण राणे से मुलाक़ात भी करायी। ■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

शिव पूजन के लिए सर्वोत्तम है श्रावण मास

श्रावण मास की कथा को श्रवण (सुनने का) करने का बहुत महात्म्य है, इसीलिए इस मास को श्रावण (सावन) कहते हैं सावन माह के बारे में एक पौराणिक कथा है कि–

"जब सनत कुमारों ने भगवान शिव से उन्हें सावन महीना प्रिय होने का कारण पूछा तो भगवान भोलेनाथ ने बताया कि जब देवी सती ने अपने पिता दक्ष के घर में योगशक्ति से शरीर त्याग किया था, उससे पहले देवी सती ने महादेव को हर जन्म में पति के रूप में पाने का प्रण किया था। अपने दूसरे जन्म में देवी सती ने पार्वती के नाम से हिमाचल और रानी मैना के घर में पुत्री के रूप में जन्म लिया। पार्वती ने युवावस्था के सावन महीने में निराहार रह कर कठोर व्रत किया और शिव को प्रसन्न कर उनसे विवाह किया, जिसके बाद ही महादेव के लिए यह विशेष हो गया।"

इसके अतिरिक्त एक अन्य कथा के अनुसार, मरकंडू ऋषि के पुत्र मारकण्डेय ने लंबी आयु के लिए सावन माह में ही घोर तप कर शिव की कृपा प्राप्त की थी, जिससे मिली मंत्र शक्तियों के सामने मृत्यु के देवता यमराज भी नतमस्तक हो गए थे।

आचार्य रामू लाल पाण्डेय
लखनऊ
मो.: 9792127015

भगवान शिव को सावन का महीना प्रिय होने का अन्य कारण यह भी है कि भगवान शिव सावन के महीने में पृथ्वी पर अवतरित होकर अपनी ससुराल गए थे और वहां उनका स्वागत आर्घ्य और जलाभिषेक से किया गया था। माना जाता है कि प्रत्येक वर्ष सावन माह में भगवान शिव अपनी ससुराल

आते हैं। भू–लोक वासियों के लिए शिव कृपा पाने का यह उत्तम समय होता है।

पौराणिक कथाओं में वर्णन आता है कि इसी सावन मास में समुद्र मंथन किया गया था। समुद्र मथने के बाद जो हलाहल विष निकला, उसे भगवान शंकर ने कंठ में समाहित कर सृष्टि की रक्षा की; लेकिन विषपान से महादेव का कंठ नीलवर्ण हो गया। इसी से उनका नाम 'नीलकंठ महादेव' पड़ा। विष के प्रभाव को कम करने के लिए सभी देवी–देवताओं ने उन्हें जल अर्पित किया।

रावण ने भी कावड़ यात्रा कर शिव जी का जलाभिषेक किया था। इसलिए शिवलिंग पर जल चढ़ाने का ख़ास महत्व है। यही वजह है कि श्रावण मास में भोले को जल चढ़ाने से विशेष फल की प्राप्ति होती है। 'शिवपुराण' में उल्लेख है कि भगवान शिव स्वयं ही जल हैं। इसलिए जल से उनकी अभिषेक के रूप में अराधना का उत्तमोत्तम फल है, जिसमें कोई संशय नहीं है।

शास्त्रों में वर्णित है कि सावन महीने में भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं। इसलिए ये समय भक्तों, साधु–संतों सभी के लिए अमूल्य होता है। यह चार महीनों में होने वाला एक वैदिक यज्ञ है, जो एक प्रकार का पौराणिक व्रत है, जिसे 'चौमासा' भी कहा जाता है; तत्पश्चात् सृष्टि के संचालन का उत्तरदायित्व भगवान शिव ग्रहण करते हैं। इसलिए सावन के प्रधान देवता भगवान शिव बन जाते हैं। सावन में चतुर्दशी तिथि और प्रदोष का बहुत महात्म्य है इस दिन तो अवकाश (काम से छुट्टी) ले कर शिव जी की पूजा अर्चना जप तप और दान करना चाहिए।

इसी सावन मास में 16 अगस्त 2021सोमवार को दिन भर अनुराधा नक्षत्र भी पड़ रही है, इस नक्षत्र में शिव पूजा करने का फल की महिमा बता पाना नामुमकिन है क्योंकि यह योग बहुत कम पड़ता है और बहुत ही ज्यादा पुण्यप्रदायक और मुक्तिप्रद है ।

सावन मास में सोमवार को अनुराधा नक्षत्र पड़ने पर काशी में गंगा स्नान कर गौरी केदारेश्वर(केदार घाट) के दर्शन का भी विधान है। क्या आप जानते हैं कि भगवान शिव अपने शरीर पर भस्म (राख) धारण क्यों करते हैं ? आओ जरा चिंतन करें। माना कि इस दुनियाँ में बहुत कुछ है। कहीं रत्नों की खानें हैं तो कहीं बहुमूल्य सम्पदाएँ। कहीं स्वर्ण नगरी है तो कहीं रत्न जड़ित महल। कहीं मनोहर वाटिकाएं हैं तो कहीं शीतल सरोवर। कहीं रेतीले रेगिस्तान है तो कहीं हरे भरे सुंदर पहाड़ मगर इतना सब कुछ होने के बाद भी ये सारी वस्तुएं एक न एक दिन नष्ट होकर मिट्टी में ही मिलने वाली हैं अथवा राख का ढेर ही होने वाली हैं। इस संसार में जो कुछ भी आज है वह कल के लिए मात्र और मात्र एक राख के ढेर से ज्यादा कुछ भी नहीं। यहाँ तक कि हमारा स्वयं का शरीर भी एक मुट्ठी राख से ज्यादा कुछ नहीं है। जीवन का अंतिम और अमिट सत्य राख ही है। अतः राख ही प्रत्येक वस्तु का सार है और इसी सार तत्व को भगवान शिव अपने शरीर पर धारण करते हैं।भगवान शिव की भस्म कहती है कि किसी भी वस्तु का अभिमान मत करो क्योंकि प्रत्येक वस्तु एक दिन मेरे समान ही राख बन जाने वाली है।आपका बल, आपका वैभव, आपकी अकूत सम्पदा सब यहीं रह जाने हैं। प्रभु कृपा से जो भी आपको प्राप्त हुआ है उसे परमार्थ में,परोपकार में, सद्कार्यों में और सेवा कार्यों में लगाने के साथ – साथ मिल बाँट कर खाना सीखो! यही मनुष्यता है, यही दैवत्व है और यही जीवन का परम सत्य व जीवन की परम सार्थकता है। श्रावण मास में शिव पूजन करते समय चिन्तन करें कि भगवान् शिव अपने हाथ में त्रिशूल रखते हैं। इसका क्या सन्देश है? तीन विकारों को नियंत्रित करता है ये त्रिशूल, काम–क्रोध और लोभ। ""तात तीन खल अति प्रवल काम क्रोध और लोभ""

काम–क्रोध–लोभ को पूरी तरह खतम तो कदापि नहीं किया जा सकता पर नियंत्रित जरूर किया जा सकता है। इनको साधा जा सकता है। क्रोध तो शिवजी को भी आता है लेकिन क्षण विशेष के लिए। कामदेव को भस्म करते समय क्रोधित हुए पर जब कामदेव की पत्नि रति आई तो उसे देखकर द्रवित हो गए। शक्ति का सही दिशा में प्रयोग ही पुन्य है और गलत दिशा में प्रयोग ही पाप है। शिवजी ने अपनी ऊर्जा को नियंत्रित कर रखा है। ऊर्जा का नियंत्रण ही साधना है और यही योग है।भगवान महादेव के मस्तक पर चंद्र सुशोभित रहता है। चंद्रमा शीतलता का प्रतीक है और शीतलता भगवान भोलेनाथ को अतिप्रिय है। सोम का दूसरा अर्थ सौम्यता भी होता है।

अर्थात् जिसमें शीतलता है, जिसमें सौम्यता है वो भगवान शिव को अतिप्रिय है। या यूँ कहें कि भगवान शिव की शरण में जाने के बाद जैसे कुटिल चंद्रमा भी सर्व पूज्य और शीतल व सौम्य हो गया इसी प्रकार यह जीव भी उन भोलेनाथ की शरण में जाकर शीलता और सौम्यता को प्राप्त कर जाता है।

संसार तुम्हारे विरुद्ध खड़ा हो जाओ चिंता मत करना। बस जीवन में शालीन व सहज बने रहना। जैसे ही भगवान शिव के पूजन के लिए जाओगे शिव रीझ जाएँगे और सारे संकटों को हर लेंगे। बहुधा लोगों को लगता है कि हम बहुत भोले हैं, इसलिए लोग ठग लेते हैं। बिलकुल भी परेशान ना होना, भोलापन को बने रहने देना। भोले भक्तों के नाथ ही ये भोलेनाथ हैं। भगवान भोलानाथ तुम्हारे साथ खड़े हैं।■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

सभी समस्याओं का समाधान भक्ति और आध्यात्मिक योग है

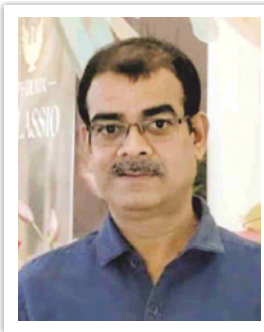

रमेश शर्मा
लखनऊ
मो.: 9455555758

सांसारिक जीवन की प्रतिस्पर्धा में सभी के जीवन में दुख है, असंतोष है। तो इन समस्याओं का समाधान क्या है? इस संसार में मनुष्य शास्त्रों को समझ सकता है, उसे अपने जीवन में लागू कर सकता है। संसार में जितनी भी समस्याएं हैं उनका समाधान आध्यात्मिक योग ही है। जीव का कल्याण, मानव का कल्याण इसी आध्यात्मिक योग से हो सकता है। जिस भगवान ने हमें बनाया, दुनिया बनाई उस भगवान ने ही सभी समस्याओं के समाधान के लिए भक्ति मार्ग बताया। जब कोई व्यक्ति आध्यात्म योग करने लगता है तो सदा के लिए दुख और शोक से मुक्त हो जाता है। आध्यात्मिक व्यक्ति सांसारिक दुखों के साथ ही सांसारिक सुखों से भी मुक्त हो जाता है। सुख क्या है? हम समझ ही नहीं पाते। किसी वस्तु या व्यक्ति में सुख नहीं तलाशना चाहिए। योग का मतलब होता है जोड़ना परमात्मा का जीव से। आजकल जिस योग का प्रचलन है वह योग शरीर को ठीक करने के लिए है। यह आध्यात्मिक योग नहीं है। जिस भगवान ने हमें बनाया, दुनिया बनाई वह भगवान कह रहा है कि सभी समस्याओं का अंत आध्यात्मिक योग से ही है। अध्यात्म योग की ओर अग्रसर जब कोई व्यक्ति अध्यात्म योग करने लगता है तो वह सदा के लिए दुख और शोक से मुक्त हो जाता है। अध्यात्म योग की ओर अग्रसर व्यक्ति दुःखो के साथ ही संसार के सुख से भी मुक्त हो जाता है। हम तो इतने बुद्धू हैं कि सुख क्या है? समझ ही नहीं पाते हैं। किसी वस्तु या व्यक्ति में सुख नहीं तलाशना चाहिए। एक बार एक धनी व्यक्ति अपने बेटे के साथ मेला घूमने गया।बेटा और पिता दोनों मेले का आनंद ले रहे थे कि अचानक बेटे का हाथ पिता के हाथ से छूट जाता है। कुछ देर तक तो बालक को मेले में आनंद आता है। लेकिन कुछ देर बाद ही वह परेशान होकर रोने लगता है। अपने पिता को ढूंढते मेले से निकलकर सड़क पर आ जाता है। उसे रोता देखकर किसी ने सोचा कि इसे भूख लगी है खाना दिया, किसी को लगा इसे ठंड लग रही है तो कपड़े दिये, किसी को लगा कि पैसे नहीं है इसलिए रो रहा है तो पैसे दिए। लेकिन वह रोता रहा। चौथे व्यक्ति ने सोचा कि इसे पुलिस स्टेशन ले जाना चाहिए और उसको पुलिस स्टेशन ले गया। पुलिस वाले उसे देखते ही खुश हो गए और बोले कि हम तो इसे ही ढूंढ रहे थे। इसके पिता ने थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई है कि मेरा बेटा खो गया है। पिता अपने बेटे के लिए परमात्मा है। इसी तरह हम सब परमपिता परमात्मा के बच्चे हैं। अपने मार्ग से विमुख हैं। मेले में खोए बालक की तरह दुःखी और परेशान है। भगवान का साथ है तो हम सुखी हैं। जिस दिन हम परमात्मा से विमुख हो जाते है, हम दुखी हो जाते हैं। संसार में हम से कम पैसे, हम से अधिक परेशानियों के होते हुए भी लोग भी सुखी हैं। समाधान है हमारा भगवान से जुड़ाव। मेले में बिछड़ा बालक अपने पिता से मिल गया तो सारा दुख भूल खुश हो गया। उसी प्रकार परमात्मा से जुड़ाव सभी दुःखो को खत्म कर देता है। धन संपत्ति, वस्तुओं और पैसे से लगाव यह सभी भौतिक योग है। लेकिन आत्मा का परमात्मा से योग आध्यात्मिक योग है। भौतिक योग में शांति नहीं मिलती लेकिन आध्यात्मिक योग में शांति मिल जाती है। आध्यात्मिक होने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को माध्यम बनाया है। उन्होंने गीता में कहा है कि कहा है कि मैं ही परमपिता हूं, मैं ही सबका धाता हूं।

हम मंदिर जाते हैं, पूजा करते है, श्लोक बोलते हैं त्वमेव माता च पिता त्वमेव। त्वमेव बंधु च सखा त्वमेव। लेकिन हम ईश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं। हम लोग मंत्र तोते की तरह से रट लेते हैं, लेकिन जीवन में उतारते नहीं। एक बार परमपिता परमात्मा को सब कुछ मान लिया है तो फिर चिंता करने की जरूरत नहीं है। एक शिकारी चर्चा कर रहा था कि कल जंगल में जाल लगाऊंगा, दाना डालूंगा, पक्षी दाना चुगने आएंगे तो जाल फसेंगे उन्हें बाजार में बेंचकर पैसे इकट्ठा करूँगा।

एक संत बहेलिये की बात सुन रहे थे। उन्हें पक्षियों की भाषा आती थी। संत ने पक्षियों को बहेलिये के जाल लगाने की बात बताई। सभी ने रट भी लिया कि हमे सतर्क रहना है। सब रटते रहे कि शिकारी जंगल आएगा, जाल लगाएगा, दान डालेगा, पक्षी दाना चुगने जायेगे तो जाल में फंस जायेगे। शिकारी आया, जाल बिछा दिया। उसमें दाना भी डाल दिया। अचानक सारे पक्षी जमीन पर उतर आए और सब पक्षी बोल रहे थे कि शिकारी आएगा, जल लगाएगा, दान डालेगा, हमे उसमे फंसना नही है और स्वयं दाना भी चुगने लगे और शिकारी के जाल में फंस गए। इसी तरह हम लोग कितने भी मंत्र, श्लोक रट ले लेकिन अगर उसको अमल में नहीं लाते तो उसका पूर्ण लाभ कैसे मिलेगा। आप लोग कितनी भी अच्छी बातें याद रखो लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि आप उसपर अमल कितना करते हो। कुछ विद्वान लोग बात बहुत अच्छी करते हैं लेकिन जीवन में अमल में नहीं लाते तो सब बेकार है। जिस तरह से मलय पर्वत पर कीमती चंदन को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए गधे का इस्तेमाल होता है। लेकिन चंदन का महत्व गधों को नहीं मालूम। उसी तरह हम लोग श्लोक तो याद कर लेते हैं, पढ़ते भी हैं लेकिन उसका महत्त्व हमें नहीं पता। जब उसका महत्व नहीं पता होता है तो उसका असर भी नहीं होता। हम अपने जीवन में, अपने आचरण में क्या उतारते हैं, उसका असर पड़ता है। भगवान ही ऐसे पात्र हैं जो हमारी भावना को समझ सकते हैं।

भगवत गीता में कृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन भगवान को धाता मान लिया है तो किसी प्रकार की चिंता दुख नहीं रहेगा। छोटे छोटे बच्चे प्रसन्न रहते हैं कोई चिंता नहीं करता है। मां खाना खिला देती है, पिता कपड़े पहना देते हैं। वह छोटा बालक हम जैसे साधारण माता पिता पर आश्रित हो गया है और निश्चिंत है।हमारे मां–बाप तो परमपिता परमात्मा है, तो चिंता किस बात की। अगर हमने विश्वास कर लिया, तो फिर परमात्मा हमारी चिंता करेगा। भक्ति का मार्ग ऐसा है कि भक्ति के साथ में चलो तो पवित्र हो जाओगे। डॉक्टर दवाई देते हैं हमें कंबीनेशन नहीं पता होता है लेकिन हम ठीक हो जाते हैं। उसी तरह प्रभु नाम लिया तो सारे पापों से मुक्ति मिल जाएगी। भक्ति के मार्ग में भगवान को हमारी गलती दिखाई नहीं देती है। भगवान श्रीकृष्ण ने तो राक्षसी पूतना को भी माँ मान लिया था और सीधे बैकुंठ भेजा। राम नाम का जप करो। भक्ति मार्ग त्याग का भाव लाती है, परमार्थ का भाव लाती है। जैसे अगरबत्ती खुद खत्म हो जाती है लेकिन दूसरों को खुशबू दे जाती है। गाय का दूध अपने लिए नहीं दूसरों के लिए होता है। वृक्ष दूसरे को फल देते हैं, नदी का पानी दूसरे के लिए होता है। इसी तरह भक्ति मार्ग में लगे संत दूसरे का कल्याण करते हैं। ■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

पूज्य बाबा नीबकरौरी महाराज जी की अनूठी कृपा से जीवन दान

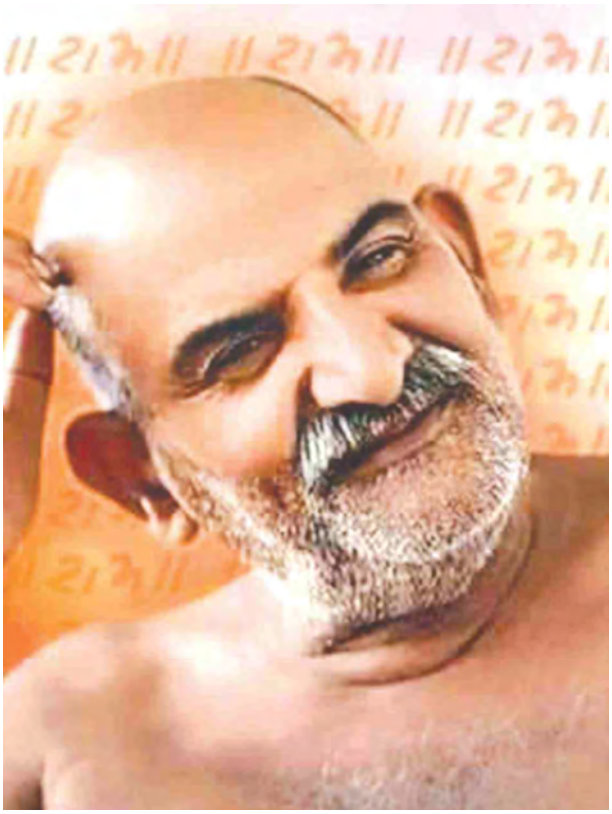

राधेश्याम चतुर्वेदी
जयपुर
मो.: 8765837594

जैसा कि विनय चालीसा में वर्णित है –जा पर कृपा दृष्टि तुम करहू। रोग शोक दुःख दारिद हरहू। तुम्हरो रूप लोग नहिं जानैं। जापौं कृपा करहु सोई मानें। इस चौपाई का ज्वलन्त अर्थ श्री रत्नेश कुमार पुत्र श्री श्याम नारायण सिंह, निवासी ग्राम दोघरा, जिला सीतामढ़ी (विहार) के जीवन पर खरी उतरती है वे दिल्ली में नौकरी करते हैं। उन्होने प्रस्तुत अनुभूति लेख को हनुमत कृपा पत्रिका में देने को कहा जिसे मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ। अप्रैल 2018 में उनकी तबियत बहुत खराब हो गई थी। कई डाक्टर और कई प्रकार के दवा लेने के बाद भी उनके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हो रहा था और रोग पकड़ में नहीं आ रहा था। दिन प्रति दिन हालत खराब होती जा रही थी। वहां पर अच्छे अच्छे डाक्टरों द्वारा वे इलाज कराते रहे। दिल्ली स्थित मॉडल टाउन के डाक्टर ने उन्हे टी.बी. रोग से ग्रसित बताया और उनके द्वारा लिखित दवा पर विश्वास करके लेते रहे , परन्तु उनके हालत में कोई सुधार नही हो रहा था। उनके माता पिता जी करीब 36 वर्षों से प्रयागराज में माघ के महीने में कल्पवास करते चले आ रहे हैं। वर्ष 2019 के कुम्भ में भी वे लोग प्रयागराज आये थे। वे भी श्री बाबा नींब करौरी महाराज जी के बहुत पुराने भक्त है। पू ० अशोका दीदी व श्री इन्द्रेश पाण्डे जी एवं उनके परिवार के संरक्षता में श्री बाबा नीव करौरी सत्संग केन्द्र, 4 चर्च लेन, प्रयाग का पाण्डाल श्री पाण्डेय जी के अथक परीश्रम तन, मन धन से कुम्भ, प्रयागराज में स्थापित हो सका था साथ ही वृन्दाबन आश्रम से भी कुछ लोग भेजे गये थे जिनके द्वारा श्री महाराज जी की पूजा भोग व भण्डारा चलता रहा। मेले मे बने पांण्डाल के कुटी में श्री बाबा नींब करौरी महाराज के विग्रह के सामने नित्य सुन्दर काण्ड और हनुमान चालीसा तथा विनय चालीसा का पाठ मुझे सौंपा गया था जिसे मैं निरन्तर करता रहा। श्री चित्रगुप्त वार्ष्णेय सपरिवार, श्री श्याम नारायण सिंह एवं अन्य भक्तगण के सहयोग रहा। एक दिन श्री रत्नेश सिंह के पिता जी ने मुझसे अपने पुत्र के बीमारी की हाल बताये और बहुत चिन्तित अवस्था में शीघ्र ही अपने घर लौटने की इच्छा प्रकट की। मैने श्री बाबा जी के कृपा से बड़े आस्था व विश्वास के साथ उन्हे न जाने की सलाह दी। तब उन्होने अपने पुत्र रत्नेश सिंह जी से दिल्ली से मुझे बात करने को कहा और मैने उनसे बात की तथा उनको श्री बाबा नींब करौरी महाराज जी से अपने बीमारी के ठीक होने हेतु प्रार्थना करने तथा हनुमान चालीसा का पाठ नित्य प्रति करने की सलाह दी। परन्तु बीमारी अवस्था में वह यदा कदा हनुमान चालीसा का पाठ एवं श्री महाराज जी से अपने स्वस्थ होने हेतु प्रार्थना करते रहे और कुछ आराम होने लगा। जबकि वह श्री बाबा नींब करौरी महाराज जी

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। जय प्रयाग राज कुम्भ से उनके माता पिता जी अपने घर वापस चले गये और बड़े आस्था व विश्वास के साथ मेरे बताये गये पाठ को नित्य प्रति करने की सलाह अपने पुत्र को दी तथा मेरे अनुभूतियों को उनसे बताया तब उन्हें श्री बाबाजी के प्रति विश्वास हुआ। उसी समय उनके गांव पर उनके भतीजे की शादी 21 अप्रैल 2019 को थी। वे डाक्टर से राय लेकर अपने घर आ गये। शादी समारोह समाप्त हो गया और उनका रोग बढ़ता गया और उनको लगा कि अब वह ठीक नहीं होंगे 1 25 अप्रैल 2019 को उनकी चेतना जबाव देने लगी फिर अपने परिवार के मदद से पटना गये तो परन्तु वहां भी उन्हे निराशा ही मिली। लेकिन अब उनका पानी पीना भी कठिन हो गया था। अंततः परिवार के लोग परेशान होकर पुनः उन्हें आनन फानन में हवाई जहाज से दिल्ली ले गये। वहां पर विनायक अस्पताल में डा 0 मल्होत्रा के संरक्षण में भर्ती हुये। डाक्टर साहब ने सभी टेस्ट कराये और बताये कि फेफड़े में तकलीफ है गलत दवा चल रही है। अब आपरेशन शीघ्र कराना उचित होगा। परिवार वालों ने खर्च पूछा तो उन्होने 1,25,000 रू 0 एक मशीन से एवं दूसरी मशीन से 2,50,000 रू 0 आपरेशन का बताया जो उनके आर्थिक क्षमता से बाहर था। फिर भी उनके परिवार वालों द्वारा उनके ठीक होने की बात किये तो डाक्टर साहब ने कहा कि रोगी के ठीक होने की कोई गारंटी नहीं है। श्री रत्नेश जी सब बाते सुन रहे थे। उसी समय मेरे द्वारा बताये गये हनुमत् स्वरूप बाबा नींब करौरी महाराज को मन से याद किये और राम राम कहने लगे। एकाएक उन्हें लगा कि उनके अन्दर कोई शक्ति आगई है और वे उठ कर चल दिये और कहने लगे कि उन्हे मरना कबूल है परन्तु यहां इलाज नहीं करा सकते। सभी लोग उनको लेकर उनके आवास को चल दिये , रास्ते में लगता है कि बाबा जी के कृपा से उनके साथ गये किसी सज्जन ने उन्हें सलाह दी कि यहीं पास में एक बार राजन बाबू हास्पिटल में चला जाय और उन्हें वहां दिखा लिया जाये। वे लोग वहां उनको लेकर चले गये। वहां के डाक्टर द्वारा उन्हें देखा गया और उनका इलाज शुरू हुआ 2 मई 2019 से 14 जनवरी 2020 तक इलाज हुआ। श्री बाबाजी के कृपा से अब वे व उनके परिवार के लोग विल्कुल ठीक हैं और तब से वह दिल्ली स्थित श्री बाबा जी के मंदिरों में दर्शन पूजन सपरिवार करने जाया करते हैं। अब वे कहते हैं कि श्री बाबा नींब करौरी महाराज जी की कृपा से ही उन्हे जीवन दान मिला है। यह महाराज जी की ही कृपा है। श्री रत्नेश जी

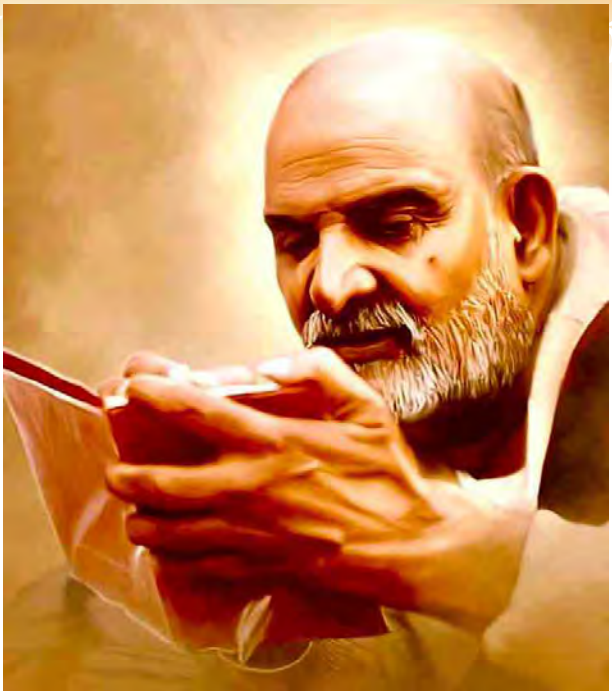

इस अनुभूति के लेख को हनुमत कृपा पत्रिका में मुझे व श्री बाबा जी के प्रिय स्नेही भक्त श्री चित्रगुप्त वार्ष्णेय जी से देने को कहा जिसे पढ़कर भक्तजनों की रुझान श्री बाबाजी के प्रति हो। मुझे यह विश्वास है कि मेरी भी नैया बाबा नींब करौरी महाराज जी अवश्य पार लगायेगे। मेरे पुत्र समीर कुमार अस्थाना तथा मुझे भी नया जीवन दान श्री बाबा जी के कृपा से मिला जो स्मृति सुधा एवं पुष्पांजलि में छप चुकी है। मेरा श्री बाबा नींब करौरी महाराज जी के भक्तों से यही प्रार्थना है कि वे लोग विनय चालीसा , हनुमान चालीसा व सुन्दर काण्ड का पाठ अवश्य किया करें उनके भी संकट अवश्य दूर हो जायेंगे। श्री बाबा नींब करौरी महाराज जी की जय श्री सिद्धी माँ जी की जय। श्री हनुमान जी महाराज की जय। दि012–07–2021 राधे श्याम अस्थाना व चित्रगुप्त वाय, प्रयागराज। तथा मेरे अनुभूतियों को उनसे बताया तब उन्हें श्री बाबाजी के प्रति विश्वास हुआ। उसी समय उनके गांव पर उनके भतीजे की शादी 21 अप्रैल 2019 को थी। वे डाक्टर से राय लेकर अपने घर आ गये। शादी समारोह समाप्त हो गया और उनका रोग बढ़ता गया और उनको लगा कि अब वह ठीक नहीं होंगे। 25 अप्रैल 2019 को उनकी चेतना जबाव देने लगी फिर अपने परिवार के मदद से पटना गये तो परन्तु वहां भी उन्हे निराशा ही मिली। लेकिन अब उनका पानी पीना भी कठिन हो गया था। अंततः परिवार के लोग परेशान होकर पुनः उन्हें आनन फानन में हवाई जहाज

से दिल्ली ले गये। वहां पर विनायक अस्पताल में डा 0 मल्होत्रा के संरक्षण में भर्ती हुये। डाक्टर साहब ने सभी टेस्ट कराये और बताये कि फेफड़े में तकलीफ है गलत दवा चल रही है। अब आपरेशन शीघ्र कराना उचित होगा। परिवार वालों ने खर्च पूछा तो उन्होने 1,25,000 रू 0 एक मशीन से एवं दूसरी मशीन से 2,50,000 रू 0 आपरेशन का बताया जो उनके आर्थिक क्षमता से बाहर था। फिर भी उनके परिवार वालों द्वारा उनके ठीक होने की बात किये तो डाक्टर साहब ने कहा कि रोगी के ठीक होने की कोई गारंटी नहीं है। श्री रत्नेश जी सब बाते सुन रहे थे। उसी समय मेरे द्वारा बताये गये हनुमत् स्वरूप बाबा नींब करौरी महाराज को मन से याद किये और राम राम कहने लगे। एकाएक उन्हें लगा कि उनके अन्दर कोई शक्ति आगई है और वे उठ कर चल दिये और कहने लगे कि उन्हे मरना कबूल है परन्तु यहां इलाज नहीं करा सकते। सभी लोग उनको लेकर उनके आवास को चल दिये , रास्ते में लगता है कि बाबा जी के कृपा से उनके साथ गये किसी सज्जन ने उन्हें सलाह दी कि यहीं पास में एक बार राजन बाबू हास्पिटल में चला जाय और उन्हें वहां दिखा लिया जाये। वे लोग वहां उनको लेकर चले गये। वहां के डाक्टर द्वारा उन्हें देखा गया और उनका इलाज शुरू हुआ 2 मई 2019 से 14 जनवरी 2020 तक इलाज हुआ। श्री बाबाजी के कृपा से अब वे व उनके परिवार के लोग विल्कुल ठीक हैं और तब से वह दिल्ली स्थित श्री बाबा जी के मंदिरों में दर्शन पूजन सपरिवार करने जाया करते हैं। अब वे कहते हैं कि श्री बाबा नींब करौरी महाराज जी की कृपा से ही उन्हे जीवन दान मिला है। यह महाराज जी की ही कृपा है । श्री रत्नेश जी इस अनुभूति के लेख को हनुमत कृपा पत्रिका में मुझे व श्री बाबा जी के प्रिय स्नेही भक्त श्री चित्रगुप्त वार्ष्णेय जी से देने को कहा जिसे पढ़कर भक्तजनों की रुझान श्री बाबाजी के प्रति हो। मुझे यह विश्वास है कि मेरी भी नैया बाबा नींब करौरी महाराज जी अवश्य पार लगायेगे। मेरे पुत्र समीर कुमार अस्थाना तथा मुझे भी नया जीवन दान श्री बाबा जी के कृपा से मिला जो स्मृति सुधा एवं पुष्पांजलि में छप चुकी है। मेरा श्री बाबा नींब करौरी महाराज जी के भक्तों से यही प्रार्थना है कि वे लोग विनय चालीसा, हनुमान चालीसा व सुन्दर काण्ड का पाठ अवश्य किया करें उनके भी संकट अवश्य दूर हो जायेंगे। श्री बाबा नींब करौरी महाराज जी की जय श्री सिद्धी माँ जी की जय। श्री हनुमान जी महाराज की जय। ■

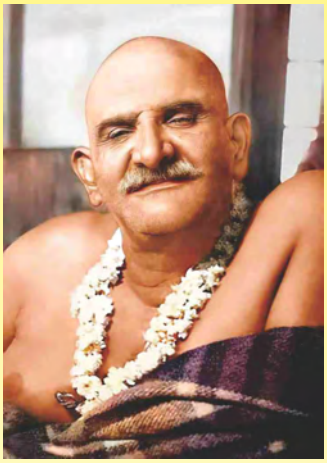

माँ बाबा आईये विराजिये, हृदयासन पर आज
तन,मन,जीवन सब अर्पन इन चरणों में आज
शुकराना हरपल करूँ,तेरी कृपा अति महान
हाथ पकड़ स्वयं तक,स्वयं ले आये भगवान
ऐसो रुप,अनूप दिखाई के दर्शन दियो महान
तीन लोक की सम्पदा, भयो सुदामा धनवान
धन्य, बड़भागी मैं, तुझमे स्वयं को पायो आज
माँ बाबा आईये विराजिये, हृदयासन पर आज....
सजल नयन, निर्मल मन, सेवा, सिमरन ध्यान
चरण शरण लगाये कर, भर दियो गुण महान
है निखर गया सँवर गया, मन कर तेरा ध्यान
भटकन मृगतृष्णा सी, मन निर्गुणियां बेजान
कस्तूरी तुम्हरे मन की, महका गई मन प्राण
अप्रतिम कंबल छुअन से, अंतस महका आज
माँ बाबा आईये विराजिये, हृदयासन पर आज....
राम नाम की सुंदर महिमा, और तेरा गुणगान
मन मयूरे नाच रहें हैं आँगन, झूमें भक्ति महान
मन भावविभोर हुआ है, ये देख हे! कृपानिधान
प्रेम–प्रीत का अमृत बरसे, सब करें हैं रसपान
परमानंद की हुई अनुभूति, परमसुख मिलो आज
माँ बाबा आईये विराजिये, हृदयासन पर आज....

नीलिमा मिश्रा
219–संतोष नगर कॉलोनी (द्वारिका पुरी)
निकट माँ काली मंदिर, लखीमपुर–खीरी–262701

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

गुरु पूर्णिमा पर विशेष

सदगुरु के सात लक्षण

गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु के आरम्भ में आती है, प्राय: इसी दिन से 'चातुर्मास' या 'चौमासा' का भी प्रारंभ माना जाता है, इस वर्ष चातुर्मास 20 जुलाई से प्रारंभ हुआ है। चातुर्मास को ऋतुओं का संधिकाल भी कहा जाता है इस दिन से चार माह तक परिव्राजक साधु-सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। ये चार महीने मौसम की दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ होते हैं क्योंकि इन चार महीनों में न ही अधिक गर्मी और न ही अधिक सर्दी होती है अत: ये माह अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गये हैं

पं. अनुराग मिश्र 'अनु'
स्वतंत्र पत्रकार व आध्यात्मिक लेखक
मो.: 8009110101

सनातन परम्परा में गुरू पूर्णिमा का पवित्र पर्व उन सभी आध्यात्मिक गुरुओं को समर्पित है जिन्होंने कर्म योग के सिद्धांत के अनुसार स्वयं व अपने शिष्यों के साथ ही सदैव संपूर्ण जगत के कल्याण की ही कामना की। गुरु पूर्णिमा का पर्व भारत, नेपाल और भूटान में हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म के अनुयायी बड़े ही उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। यह पर्व अपने आध्यात्मिक गुरुओं के सम्मान और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने का एक दुर्लभ क्षण है । हिन्दू पंचांग के अनुसार आषाढ़ मास की पूर्णिमा को ही 'गुरु पूर्णिमा' कहा जाता है । हिन्दू परम्परा के अनुसार 'गुरु पूर्णिमा' का पर्व वेदों के रचयिता 'महर्षि वेदव्यास' के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है इसीलिए इसका एक प्रचलित नाम 'व्यास पूर्णिमा' भी है ।

गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु के आरम्भ में आती है, प्रायः इसी दिन से 'चातुर्मास' या 'चौमासा' का भी प्रारंभ माना जाता है, इस वर्ष चातुर्मास 20 जुलाई से प्रारंभ हुआ है। चातुर्मास को ऋतुओं का संधिकाल भी कहा जाता है इस दिन से चार माह तक परिव्राजक साधु–सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं। ये चार महीने मौसम की दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ होते हैं क्योंकि इन चार महीनों में न ही अधिक गर्मी और न ही अधिक सर्दी होती है अतः ये माह अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गये हैं जिस प्रकार सूर्य के ताप से तप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है, वैसे ही गुरु–चरणों में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है।

हिन्दू धर्मशास्त्रों में गुरु का दुर्लभ लक्षण भी बताया गया है जिसके अनुसार 'गु' का अर्थ है– अंधकार या मूल अज्ञान और 'रु' का अर्थ है– उसका निरोधक अर्थात नष्ट करने वाला ।

अर्थात जो मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान की प्राप्ति की ओर ले जाये उसे ही 'गुरु' कहा जाता है ।

"अज्ञान तिमिरांधश्च ज्ञानांजन शलाकया, चक्षुन्मीलितम तस्मै श्री गुरुवै नमः"

सनातन परम्परा में गुरु को ईश्वर से भी उच्च

स्थान प्राप्त है इसीलिए कहा गया है–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

श्रीरामचरितमानस के रचयिता और परम श्रीराम भक्त गोस्वामी तुलसीदास जी नें श्रीरामचरितमानस को सद्गुरु की उपाधि दी है और श्रीरामचरित मानस के सात कांडों को सद्गुरु के सात लक्षण बताया है। गोस्वामी जी ने हमें हर कांड के माध्यम से ये बताने व समझाने का दुर्लभ प्रयत्न किया है कि एक सच्चे गुरु में कौन कौन से दिव्य लक्षण होने चाहिये, अतः हम श्रीरामचरितमानस के सातो कांड के माध्यम से सदगुरु के उन सात दिव्य लक्षणों को समझने का प्रयास करते हैं–

1. बालकाण्ड– बाल अर्थात बालक अर्थात निर्मल व शुद्ध हृदय। द्वेष, जलन, छल, कपट, राग–वैराग्य, झूँठ–पाखंड, ऊँच–नीच से मुक्त हृदय से सद्गुरु का पहला लक्षण है।
3. अयोध्या कांड– यह अध्याय श्रीरामचरितमानस के सभी पात्रों के त्याग का विलक्षण उदाहरण है इस अध्याय में महाराजा दशरथ, भगवान श्रीराम, मातासीताजी, लक्ष्मणजी, कौशल्याजी, भरतजी, समस्त अयोध्यावासियों व अन्य सभी लोगों के द्वारा जो त्याग किया गया है उसकी महिमा अपरम्पार है यह है सद्गुरु का दूसरा लक्षण अर्थात त्याग भावना
3. अरण्यकांड– इस अध्याय में प्रभु श्रीराम अपने रथ को त्याग कर अपने पिता को दिए वनवास के वचन को निभाने हेतु पैदल यात्रा करते हुए बिना किसी जातिगत भेदभाव के सभी वर्णों के लोगों के यहाँ गए जैसे निषादराज गुह, केवट, भारद्वाज ऋषि, महर्षि वाल्मीकि, अत्रिमुनि, सती अनुसूया, शबरी इत्यादि। यह अध्याय हमें सिखाता है कि सद्गुरु वो है जो निरंतर गतिशील रहे उसके हृदय में जाति, पंथ व पद का कोई भी भेद ना हो फिर चाहे उसका शिष्य किसी राजा का पुत्र हो या सामान्य दास पुत्र।
4. किष्किन्धा कांड– इस अध्याय में प्रभुश्रीराम ने वानरराज सुग्रीव को अपना सखा बना कर उसका खोया हुआ राजसिंहासन पुनः वापस दिलाया है। यही सद्गुरु के लक्षण हैं कि वो अपने शिष्य से मित्रवत व्यव्हार रखकर सफलतापूर्वक उसका मार्गदर्शन करते हुए उसको धर्म व सदमार्ग के रास्ते पर लेकर जाये। भगवतगीता में भगवान ने कभी भी अर्जुन को शिष्य न कहकर अपना "सखा" ही कहा है, हे अर्जुन तुम मेरे "सखा" हो।
5. सुन्दरकाण्ड– सम्पूर्ण श्रीरामचरितमानस में "सुन्दरकाण्ड" ही एक ऐसा अध्याय है जिसकी इस कलिकाल में सबसे अधिक महत्ता है। "सुन्दरकाण्ड" में महाबली हनुमान जी के द्वारा लंका–दहन किया गया है ! पूज्य संतों द्वारा लंका–दहन का तात्पर्य यह बताया गया है कि हमारे जीवन में जो काम–क्रोध–मद–लोभ नामक चार विकार हैं उनका पूर्णतया दहन कर देना। जो गुरु साधक के इन चार विकारों का सफलतापूर्वक दहन करवा दे वही सच्चा सदगुरु है।
6. लंकाकांड– इस अध्याय में लंकापति रावण का वध प्रभुश्रीराम ने उसकी नाभि में बाण मारकर किया इसका अर्थ ये है कि जो गुरु शिष्य के मनरुपी नाभि के विकारों को छेद दे और मोहरूपी रावण का वध कर दे वही सच्चा सद्गुरु है।
7. उत्तरकाण्ड– उत्तर अर्थात समाधान अर्थात निष्कर्ष। शिष्य के मन–मस्तिष्क में उठ रहे प्रत्येक प्रश्न का समुचित उत्तर देकर उसका समुचित समाधान करना ही सद्गुरु का सातवां व अंतिम लक्षण व कर्तव्य है।

इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस के सातों अध्याय के माध्यम से 'सद्गुरु' के सात लक्षणों को परिभाषित किया गया है। हिन्दू मान्यता के अनुसार गुरु पूर्णिमा का पर्व हमें अंधकार से प्रकाश अर्थात अज्ञान से ज्ञान के मार्ग पर प्रशस्त करने का एक सुगम व सरल मार्ग दिखाता है।■

मौन शक्ति

कितना गूढ रहस्य है ये
अहं के पिंजरे में कैद
यहाँ कौन किसका हुआ है
अजीब सी हलचल है यहाँ
भीड़ के बीच हर एक
अस्तित्व में
मंजिल की ओर कदम बढ़ रहे हैं
वर्तमान को रौंदते हुए
उच्च से उच्चतर
और उच्चतम की आकांक्षा लिये
विषादों का हलाहल
विचारों का मंथन
सब अंतस में संजोकर बढ़ना है
हर क्षण उस मरीचिका की ओर
जिसे सुख , सफलता का गढ़ कहा जाता है
स्वार्थ के आभूषण
रहस्य के भंवर
सब कुछ समेट कर आगे बढ़ना है

आगे बहुत आगे
वर्तमान को रौंदते हुए
अंतहीन भविष्य की ओर
आघातों की पीड़ा से पल्लवित हो रहा है
हर एक जीवन
कहते हैं प्रारब्ध से
विकसित होता है
कर्म और क्रमबद्ध जीवन
समय से परे दिन रात की
सीमा परिधि से जरा थम कर
जरा रुक कर
कल सोचा मैंने
उस अंतहीन मरीचिका की ललक लिये
जीना भूल चुका हर कोई
सुनहरे अनमोल कण
पल पल वक्त के खजाने से
बिखर रहे हैं
इसे कोई क्यों नहीं समेट लेता
ठहर कर जरा...
हाँ – थम कर जरा
थोड़ी देर के लिये
काश उठा लिये होते कुछ मोती
अतीत के विशाल सागर से
पर वहीं लहरें
जो कल बहा के ले गई थी
वर्तमान को
आज फिर गरज रही है
लीलने इस वर्तमान को
आज हर पल हम सिर्फ
भोग ही रहे हैं
कुछ खुद को भूले हुए से
वर्तमान से दूर भविष्य की ओर
महसूस तो करे
हम जीवन को
कुछ क्षण मौन के अंतस मे समाकर
पुनः ऊर्जान्वित – सा महसूस करें
कुछ अपने अस्तित्व को सहलाकर
आशीष यही है मौनी माँ का
आज सभी के जीवन में
शक्ति का उपयोग करें हम
मौन शक्ति के उपार्जन से ।

नागों की पूजा से पूरी होती हैं मनोकामनाएं

आप सभी धर्म प्रेमियों को सादर प्रणाम आपको अवगत कराना चाहूंगी दिनांक 13 अगस्त 2021 शुक्रवार को नाग पंचमी का पर्व मनाया जाएगा। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को नाग पंचमी मनाई जाती है। स्कन्द पुराण के अनुसार इस दिन नागों की पूजा करने से सारी मनोकामनाए पूर्ण होती हैं।

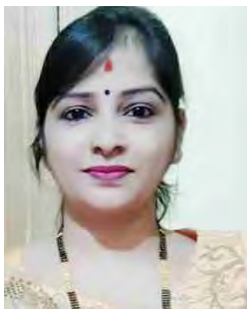

मंजू जोशी
हल्द्वानी
मो. 8395806256

नाग पंचमी मनाने का कारण

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार नागों को देव रूप में बताया गया है। कहीं भगवान शिव के हार रूप में नजर आते हैं तो कहीं भगवान विष्णु की शैय्या रूप में। इतना ही नहीं सागर मंथन के समय नाग को महत्वपूर्ण भूमिका में रस्सी रूप में दिखाया गया है। पुराणों में तो कई दिव्य नाग और नागलोक तक का जिक्र किया गया है। इन्हीं कथाओं और मान्यताओं के कारण हिंदू धर्म में नागों को देवताओं के समान पूजनीय बताया गया है और पंचमी तिथि को नाग देवता को समर्पित किया गया है।

नाग पंचमी की प्रचलित कथा

महाभारत के अनुसार कुरु वंश के राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने अपने पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने का निर्णय किया था। राजा परीक्षित की मृत्यु तक्षक नाग के काटने से हुई थी इसलिए जनमेजय ने यज्ञ से संसार के सभी सांपों की बलि चढ़ाने का निश्चिय किया। राजा जनमेजय का यज्ञ इतना प्रभावशाली था कि उसके प्रभाव से सभी सांप अपने आप खिंचे चले आते थे। तक्षक नाग इस यज्ञ के भय से पाताल लोक में जाकर छिप गए। राजा जनमेजय ने भी तक्षक नाग की मृत्यु हेतु यज्ञ शुरू किया था लेकिन काफी समय व्यतीत होने के उपरांत भी तक्षक नाग नहीं आए तब राजा ने ऋषि मुनियों से यज्ञ में मंत्रों की शक्तियों को बढ़ाने को कहा, जिससे तक्षक नाग यज्ञ में आकर गिर जाएं।

शक्तिशाली मंत्रोच्चारण के प्रभाव से तक्षक नाग यज्ञ की ओर खिंचे चले आ रहे थे। तक्षक नाग ने सभी देवताओं से अपने प्राणों की रक्षा हेतु याचना की। तदोपरांत देवताओं के आशीर्वाद से ऋषि जरत्कारु और नाग देवी मनसा के पुत्र आस्तिक मुनि नागों को हवन कुंड में जलने से बचाने के लिए आगे आए। ब्रह्माजी के वरदान के कारण आस्तिक मुनि ने जनमेजय के यज्ञ का समाप्त करवाकर नागराज के प्राणों की रक्षा की।

नाग पंचमी पर उपाय

जिन जातकों की कुंडली में कालसर्प दोष,सर्प दोष, गुरु चांडाल दोष, विष दोष आदि जैसे अशुभ दोष हो नाग पंचमी के दिन नाग देवता की पूजा करके इन दोषों से मुक्ति पा सकते हैं। नाग पंचमी में कालसर्प दोष व कुण्डली में सभी प्रकार के दोष दूर करने हेतु नाग देवता के साथ भगवान शिव की पूजा और रूद्राभिषेक करना चाहिए। चांदी के नाग नागिन का जोड़ा पूजा के उपरांत नदी में प्रवाहित करें। इससे घर में सुख, शांति और समृद्धि की प्राप्ति होती है। कालसर्प दोष की पूजा करने से जीवन में आ रही सभी प्रकार की बाधाओं से मुक्ति मिलती है। ■

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

भक्त अभिनन्दन

भक्तों में सर्वश्रेष्ठ हैं ईश्वर क्योंकि वे स्वंय भक्तों की भक्ति करते हैं। जो जिस भाव से ईश्वर की भक्ति करता है उसी भाव से हरि भी उस भक्त की भक्ति करते हैं।

1. द्विज सुदामा– गुरू सान्दिपनी के आश्रम में कृष्ण के गुरू भाई थे सुदामा। सुदामा विपन्न थे। उसकी स्त्री को कृष्ण पर अटूट विश्वास था। सुदामा की भार्या ने कृष्ण के लिए पड़ोस से तन्दुल माँग कर भेंट भेजी। नन्दलाल ने प्रेम से भेंट स्वीकार की और बदले में इन्द्रलोक से बढ़कर सम्पत्ति दान की। सुदामा चल पड़े द्वारका की ओर, मन में सोचते विचारते, द्वारका के वैभव की कल्पना करते हुये।

द्वारका में सोलह सहस्त्र रानियों के सोलह सहस्त्र महल। हर महल में कृष्ण का सुंदर रूप।

रानियाँ बड़ी मग्न हैं।
सुन कृष्ण का हास।।
हर महल में गूँज रहा।
माधव का उल्लास।।
द्वारपाल की सूचना–
द्वारपाल दे सूचना।
क्षमा करें प्रभु आना।।
खड़ा महल के द्वार कोई।
विप्र नाम सुदामा।।
कारण पूछा बोले वो।
कृष्ण सखा हूँ भाई।।
अपने श्याम को देखूँ तो।
आस मिलन की आई।।
भगवान कृष्ण का हर्ष–
अरे सुदामा आया है।
करें उसका अभिनंदन।।
भामिनी एकत्र करो तुम।
इत्र पुष्प और चंदन।।
दौड़े श्याम महल के द्वार।
सखा मिलन की धुन।।
पटरानियाँ विस्मित अपार।
द्विज विशेष हैं सुन।।

ईश्वर का अस्तित्व

एक युवक महर्षि रमण के पास आया और बातचीत के क्रम में कहा महाराज ईश्वर की कल्पना कुछ अंधविश्वासों ने की है मैं तो ईश्वर का अस्तित्व नहीं स्वीकार करता हूं महर्षि ने इसका कारण जानना चाहा तो उसने कहा कि मैं उस सत्य को मानता हूं जो दिखाई देता है मैंने लाख कोशिश की परंतु ईश्वर आज तक दिखाई नहीं दिया।

महर्षि रमण ने पूछा क्या तुम्हारे पास दिमाग है युवक ने उत्तर दिया दिमाग है भला इसमें क्या संदेह हो सकता है महर्षि ने फिर पूछा क्या तुम अपने दिमाग को देख सकते हो मुझे तो तुम्हारा दिमाग दिखाई नहीं दे रहा है क्या मैं यह धारणा बना लूं कि तुम दिमाग से वंचित हो?

महर्षि रमण के शब्द सुनकर वे युवक पकड़ा गया महर्षि रमण ने उसे समझाते हुए कहा हवा सुगंध दुर्गंध इन सब को आंखों से देख नहीं सकते हैं परंतु इन की अनुभूति अवश्य होती है इसी प्रकार ईश्वर आंखों से भले ही दिखाई ना देता हो किंतु श्रद्धा और विश्वास करने पर पग–पग पर उसकी पावन अनुभूति होती है महर्षि के अकारण तक ने उसे नास्तिक से आस्तिक बना दिया इसके पश्चात वे उनके आध्यात्मिक विचारों का प्रचार करने लगा।■

रजनी सेठ
शाहजहाँपुर, उ.प्र.
मो.: 0000000000

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

हनुमत् कृपा पत्रिका–मासिक पंचांग – सितंबर– २०२१

शक सम्वत १९४३	विक्रम सम्वत्सर →	२०७८ (आनन्द)

दिनांक	दिन	माह	सूर्योदय	नक्षत्र	तिथि समय		पर्व
					तिथि	तक	
1	बुधवार	भाद्रपद कृष्ण पक्ष	05:48	मृगशिरा	दशमी	06:21 ND	
2	गुरूवार		05:49	आर्द्रा	दशमी	06:21	
3	शुक्रवार		05:49	पुनर्वसु	एकादशी	07:44	अजा एकादशी
4	शनिवार		05:50	पुष्य	द्वादशी	08:24	प्रदोष व्रत
5	रविवार		05:50	आश्लोषा	त्रयोदशी	08:21	शिक्षक दिवस
6	सोमवार		05:50	पू0 फा0	चतुर्दशी	07:38	
7	मंगलवार		05:51	पू0 फा0	अमावस्या	06:21	प्रतिपदा तिथि हानि
8	बुधवार	भाद्रपद शुक्ल पक्ष	05:51	उ0फा0	द्वितीया	02:33 ND	
9	गुरूवार		05:52	हस्त	तृतीया	00:18 ND	हरतालिका व्रत वाराह जयन्ती
10	शुक्रवार		05:52	चित्रा	चतुर्थी	21:57	
11	शनिवार		05:52	स्वाती	पंचमी	19:37	ऋषि पंचमी
12	रविवार		05:53	विशाष	षष्ठी	17:20	स्कंद षष्ठी
13	सोमवार		05:53	अनुराधा	सप्तमी	15:10	
14	मंगलवार		05:54	ज्येष्ठा	अष्टमी	13:09	राधा अष्टमी
15	बुधवार		05:54	मूल	नवमी	11:17	विश्वेश्वरैया जयन्ती
16	गुरूवार		05:55	उ0षाढा	दशमी	09:36	
17	शुक्रवार		05:55	श्रवण	एकादशी	08:07	परिवर्तिनी एकादशी वामन जयन्ती
18	शनिवार		05:55	धनिष्ठा	द्वादशी	06:54	प्रदोष व्रत
19	रविवार		05:56	शतभिषा	त्रयोदशी	05:59	अनन्त चतुर्दशी
20	सोमवार		05:56	पू0 भाद्र0	पूर्णिमा	05:24 ND	
21	मंगलवार	आश्विन कृष्ण पक्ष	05:57	उ0 भाद्र0	प्रतिपदा	05:51 ND	पितृपक्ष प्रारम्भ
22	बुधवार		05:57	रेवती	द्वितीया	पूर्ण रात्रि	
23	गुरूवार		05:57	रेवती	द्वितीया	06:53	
24	शुक्रवार		05:58	अश्विनी	तृतीया	08:29	
25	शनिवार		05:58	भरणी	चतुर्थी	10:36	
26	रविवार		05:59	कृतिका	पंचमी	13:04	
27	सोमवार		05:59	रोहिणी	षष्ठी	15:43	
28	मंगलवार		06:00	मृगशिरा	सप्तमी	18:16	
29	बुधवार		06:00	आर्द्रा	अष्टमी	20:29	
30	गुरूवार		06:00	पुनर्वसु	नवमी	22:08	

विशेष : नक्षत्र एवं तिथि सूर्योदय के समय के दिये हैं ND - Next Day

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

हनुमत् कृपा पत्रिका-मासिक पंचांग - अगस्त - २०२१

शक सम्वत १९४३	विक्रम सम्वत्सर →	२०७८ (आनन्द)

दिनांक	दिन	माह	सूर्योदय	नक्षत्र	तिथि समय		पर्व
					तिथि	तक	
1	रविवार	श्रावण कृष्ण पक्ष	05:34	भरणी	अष्टमी	07:56	
2	सोमवार		05:34	कृत्तिका	नवमी	10:27	श्रावण का दूसरा सोमवार
3	मंगलवार		05:35	रोहिणी	दशमी	12:59	
4	बुधवार		05:35	मृगशिरा	एकादशी	15:17	कामिका एकादशी
5	गुरूवार		05:36	आर्द्रा	द्वादशी	17:09	प्रदोष व्रत
6	शुक्रवार		05:36	आर्द्रा	त्रयोदशी	18:28	
7	शनिवार		05:37	पुनर्वसु	चतुर्दशी	19:11	
8	रविवार		05:37	पुष्य	अमावस्या	19:19	
9	सोमवार	श्रावण शुक्ल पक्ष	05:38	आश्लेषा	प्रतिपदा	18:56	श्रावण का तृतीय सोमवार
10	मंगलवार		05:38	मघा	द्वितीया	18:05	
11	बुधवार		05:39	पू० फा०	तृतीया	16:53	हरियाली तीज
12	गुरूवार		05:39	उ० फा०	चतुर्थी	15:24	
13	शुक्रवार		05:40	हस्त	पंचमी	13:42	नाग पंचमी
14	शनिवार		05:40	चित्रा	षष्ठी	11:50	
15	रविवार		05:41	स्वाती	सप्तमी	09:51	तुलसीदास जयन्ती
16	सोमवार		05:41	अनुराधा	अष्टमी	07:45	श्रावण का चतुर्थ सोमवार
17	मंगलवार		05:42	ज्येष्ठा	दशमी	03:20 ND	सूर्य सिंह संक्रान्ति
18	बुधवार		05:42	मूल	एकादशी	01:05 ND	पुत्रदा एकादशी
19	गुरूवार		05:42	पू०षा०	द्वादशी	22:54	
20	शुक्रवार		05:43	उ०षा०	त्रयोदशी	20:50	प्रदोष व्रत
21	शनिवार		05:43	श्रवण	चतुर्दशी	19:00	
22	रविवार		05:44	धनिष्ठा	पूर्णिमा	17:31	रक्षा बन्धन
23	सोमवार	भाद्रपद कृष्ण पक्ष	05:44	शतभिषा	प्रतिपदा	16:30	
24	मंगलवार		05:45	पू० भा०	द्वितीया	16:04	
25	बुधवार		05:45	उ० भा०	तृतीया	16:18	कजरी तीज
26	गुरूवार		05:46	रेवती	चतुर्थी	17:13	
27	शुक्रवार		05:46	अश्विनी	पंचमी	18:48	
28	शनिवार		05:47	भरणी	षष्ठी	20:56	हलषष्ठी बलराम जयन्ती
29	रविवार		05:47	कृत्तिका	सप्तमी	23:25	
30	सोमवार		05:47	कृत्तिका	अष्टमी	01:59 ND	कृत्तिका ०६:३९ तक तदुपरान्त
				रोहिणी			रोहिणी जन्माष्टमी
31	मंगलवार		05:48	रोहिणी	नवमी	04:23 ND	

विशेष : नक्षत्र एवं तिथि सूर्योदय के समय के दिये हैं ND - Next Day

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहुँ सुर भूप।

हनुमत कृपा

मासिक पत्रिका

सदस्यता पत्र

महोदय,

मैं 'हनुमत् कृपा' मासिक पत्रिका का वार्षिक/द्विवार्षिक/पंचवार्षिक/आजीवन सदस्य रुपये.. (शब्दों में ....) नकद/डीडी/चेक/बैंक ड्राफ्ट/यूपीआई मनी ट्रांसफर द्वारा भेज रहा/रही हूं कृपया मुझे 'हनुमत् कृपा' मासिक पत्रिका के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें।

बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक सं. .... दिनांक ....

बैंक का नाम .... नामः ....

पिता का नाम .... पताः ....

.... पिन कोड ....

जिला .... राज्यः.................................. दूरभाष/मो...................................

ईमेलः...

सदस्य के हस्ताक्षर

विशेष नियम:

1. नवीनीकरण के लिए शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।
2. कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें। उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें।
3. अगर हनुमान जी व बाबा जी के किसी भक्त को पत्रिका के पिछले अंको की जरुरत हो तो वह आगे के अंकों में समायोजित (एडजस्ट) करके भेज जा सकते हैं।

सदस्यता प्रकार	शुल्क
वार्षिक	रू. 1100/–
द्विवार्षिक	रू. 2100/–
पंचवार्षिक	रू. 5100/–
आजीवन सदस्य	रू. 11000/–

Name : Hanumat Kripa Media
A/c No. : 3476717139
Bank : Central Bank Of India
IFSC : CBIN0283705
Branch : Eram College,
Indira Nagar, Lucknow.

संपादक, हनुमत् कृपा मीडिया

बी–2778, इन्दिरा नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मोबाइल नं. 9415120002

बेबसाइट : www.hanumatkripaa.com, hanumatkripa.page

प्रयागराज में पूज्य बाबा नीब करौरी जी महाराज के परम भक्त श्रीमती सुमन यादव के घर सोहबतिया बाग पर भक्तजनों ने श्रीमती सुमन यादव के पौत्र चि. आराध्य यादव के आठवां जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बाबा नीब करौरी महाराज व पूज्य हनुमान जी की विनय चालीसा व हनुमान चालीसा एवं आरती का कार्यक्रम के साथ भण्डारा प्रसाद उपस्थित भक्तजनों ने ग्रहण कर बालक आराध्य को आशीर्वाद से अभिसिंचित किया। इस अवसर पर उपस्थित भक्तगण सर्वश्री चित्रगुप्त वार्ष्णेय, अरुण यादव, गीता यादव, अजय सोनी, के.के. चौधरी, डी.एन. यादव, नागेन्द्र यादव, चन्द्रजीत यादव, पूनम वार्ष्णेय, आरती वर्मा, अनुजा यादव, अरुणा यादव, अंजली यादव आदि भक्तगण शामिल रहे।

भगवान शंकर जी की कृपा से बाराबंकी जिले के चन्दूरा (मोहम्मदपुर खाला) गांव में बीते दिनों पूर्वजों द्वारा भगवान शंकर जी की कृपा से गांव में पूर्वजों द्वारा करीब सौ साल पहले बनवाये गये भोलेनाथ जी के मंदिर में हर साल सावन माह में होने वाले जलाभिषेक, श्रृंगार पूजा, हवन, आरती, प्रसाद वितरण व सामूहिक भोजन प्रसाद गृहण करने का पारिवारिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। शंकर जी के मंदिर में आज दोपहर शुरू हुए धार्मिक कार्यक्रम में गांव में परिवार के सभी लोगों के अलावा बाराबंकी व लखनऊ से भी करीब दर्जनभर परिवार के लोग शामिल हुए। करीब चार घंटे चले कार्यक्रम में मंदिर में स्थापित शिवलिंग पर जलाभिषेक के साथ ही ॐ नमः शिवाय महामंत्र का सामूहिक जाप व श्रृंगार पूजा भी की गयी। परिवार की महिलाओं ने भी जल, अक्षत, चंदन, वेलपत्र फल–फूल आदि से शंकर जी की पूजा अर्चना की।

UPHIN/2015/46772

मूर्ति स्थापना में सम्मिलित होने का मिला सौभाग्य

फर्रुखाबाद जनपद के नीब करौरी गांव स्थित बाबा के मंदिर में श्री लक्ष्मी–नारायण के मूर्ति स्थापना, हवन पूजन और भंडारे में सम्मिलित होने का परम सौभाग्य सैकड़ो भक्तों को प्राप्त हुआ। बाबा की प्रेरणा से जयपुर राजस्थान निवासी परम् भक्त श्री राधेश्याम चतुर्वेदी ने मंदिर प्रांगण में निर्माणाधीन मंदिर में सफेद संगमरमर के मूर्ति का प्राण प्रतिष्ठा कराया इसके उपरांत भंडारे का आयोजन हुआ जिसमें भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया इस अवसर पर प्रयागराज से पधारे भक्तगण चित्रगुप्त वार्ष्णेय, कमलाकांत तिवारी, गंगाप्रसाद यादव, राजेन्द्र श्रीवास्तव, उनकी धर्मपत्नी व बच्चे तथा भदोही से आये शिव शंकर ठठेर ने श्री राधेश्याम चतुर्वेदी जी को मारुति महिमा व सुंदर कांड तथा अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया सम्मान किये जाने पर श्री चतुर्वेदी भावुक होकर रो पड़े तथा कहा कि मैं तो बाबा का एक छोटा सा सेवक हूँ बाबा ने मूर्ति स्थापना करने का सौभाग्य प्रदान करके हमें परिवार सहित धन्य कर दिया। प्राण प्रतिष्ठा में लखनऊ बरेली प्रयागराज सहित देश भर से आये सैकड़ो भक्तों को यह सुअवसर प्राप्त हुआ। जय हो बाबा नीब करौरी महाराज की ।